9

नई वाचा की श्रेष्ठता

(9:1-28)

तम्बू से सबक (9:1-10)

सुसमाचार की समझ आ जाने पर हम व्यवस्था के महत्व की प्रशंसा करते हैं जिसने हमें मसीह तक लाने में सहायता की (गलातियों 3:24)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक अपने पाठकों को उस समय के जंगल में तम्बू के दिनों तक पीछे की ओर ले गया। परमेश्वर ने मूसा को बताया था, ''वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान बनाएं, कि मैं उनके बीच निवास करूं'' (निर्गमन 25:8)। वचन पाठ मूल ढांचे पर ध्यान दिलाता है, जो पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा डिज़ाइन किया गया और ठहराया गया था। आम तौर पर हेरोदेस के मन्दिर के बारे में ऐसा नहीं कहा जाता होगा, जो पहली सदी में पाया जाता था। वास्तव में कुछ यहूदी अभी तक इसे बनाने के लिए चौथाई के हाकिम से जो एदोमी था, नाराज़ थे। परन्तु यीशु के चेलों को इस में शान लगी थी (मरकुस 13:1)। आज भी मसीही लोग पुरानी वाचा में शान समझते हैं, चाहे हम जानते हैं कि उसकी जगह नई वाचा ने ले ली है।

मन्दिर और इस का पूर्ववर्ती स्वर्ग परम पवित्र स्थान की तस्वीर मात्र थे। मन्दिर की रीति वास्तविक आराधना का रूप मात्र था। यहूदी मसीही लोगों के नाम इस पत्री में बताया गया कि वे पुराने नियम की विधियों को त्यागकर आत्मा में स्वर्गीय मन्दिर में प्रवेश करें। वास्तव में, आराधना में वे सीधे परमेश्वर के सिंहासन तक जा सकते थे, जहां पुरानी वाचा के अधीन वे किसी सूरत में नहीं पहुंच सकते थे (4:15, 16)।

इस तथ्य से नई वाचा के श्रेष्ठ लाभों का किसी भी यहूदी विश्वासी को यकीन आ जाना चाहिए था। पुराने नियम के प्रतीक सोने से लदे थे, परन्तु लेखक ने सनातन मूल्य वाले आत्मिक ''सोने'' को दिखाया। तम्बू के पूर्ण उद्देश्य को देखना सोने की परत वाले सामान और बर्तनों को देखने से कहीं अधिक मूल्य का है। नये नियम के मसीही लोगों के लिए, परमेश्वर के हमें अपने वास के एक ही स्थान के रूप में, कलीसिया को हमें देने के कारण और ढंग (देखें इफिसियों 2:20, 21) को जानना उस तक दिलेरी से पहुंचने का कारण होना चाहिए। फिर उसकी पूरी योजना में इस के कार्य को समझकर हम सचमुच में परमेश्वर की नज़दीकी में बढ़ेंगे।

हमारा उत्तम बलिदान यीशु, वह विषय है जो 9:1—10:18 में भरा है। इब्रानियों की पुस्तक के मुख्य शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में बार-बार मिलते हैं:

''चढ़ाना'' (*prospherō*): 8:3, 4; 9:7, 9, 14, 25, 28; 10:1, 2, 8, 11, 12.
''भेंट'' (*prosphora*): 10:5, 8, 10, 14, 18.

''बलिदान'' (*thusia*): 8:3; 9:9, 23, 26; 10:1, 5, 8, 11, 12.
''वाचा'' (*diathēkē*): 8:6, 8, 9, 10; 9:4, 15, 16, 17, 20; 10:16.
''लहू'' (*haima*): 9:7, 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 22, 25; 10:4.
''पाप'' (*hamartia*): 8:12; 9:26, 28; 10:2, 3, 4, 6, 11, 12, 17, 18.[1]

पवित्र स्थान और इस का सम्मान (9:1, 2)

[1]निदान, उस पहिली वाचा में भी सेवा के नियम थे; और ऐसा पवित्र स्थान जो इस जगत का था। [2]अर्थात एक तम्बू बनाया गया, पहिले तम्बू में दीवट, और मेज, और भेंट की रोटियां थीं; और वह पवित्र स्थान कहलाता है।

आयत 1. लेखक ने 8:6 में ''और उत्तम वाचा की बात की,'' परन्तु यहां पर उस ने और विस्तार से बताया। पहली वाचा में सेवा (''ईश्वरीय सेवा''; NKJV; ''आराधना के नियम''; RSV) शामिल थे। थे शब्द पर ध्यान दें कि वे नियम यीशु के क्रूस के द्वारा पहले ही हटा दिए गए ''थे'' (देखें इफिसियों 2:14–16 और कुलुस्सियों 2:14–17), जैसा कि मत्ती 5:17, 18 में भविष्यवाणी की गई। इस के अलावा पहली सदी ईस्वी में तम्बू अस्तित्व में नहीं था। व्यवस्था के अधीन आराधना से सम्बन्धित नियमों का कड़ाई से पालन किया जाना आवश्यक था, जैसा कि नादाब और अबीहू (लैव्यव्यवस्था 10:1–3) और उज्जा (2 शमूएल 6:6, 7) की मृत्यु से दिखाया गया था। सब कुछ ''नमूने के अनुसार'' बनाया और किया जाना था (इब्रानियों 8:5) । निर्गमन 25—40 में स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। स्वाभाविक ही है कि इब्रानियों का लेखक मूल नमूने की ओर लौट गया। जरूबाबिल के शासन में बना और हेरोदेस द्वारा बनवाए गए बाद वाले मन्दिरों को कई यहूदी परमेश्वर के नमूने के अनुसार नहीं मानते थे। तम्बू के लिए परमेश्वर की मूल योजनाओं पर कोई यहूदी आपत्ति नहीं कर सकता था।

विधियां सांसारिक थीं क्योंकि वे इस जगत के पवित्र स्थान की थीं। उसके ''जगत का'' या ''सांसारिक'' होने के विचार का अर्थ यह नहीं है कि यह ''संसार से मित्रता'' (याकूब 4:4) के जैसा, परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था, बल्कि यहां पर जो ''इस जगत का'' था वह ''स्वर्गीय'' से उलट था (8:5)। जगत के रूप स्वर्ग की ओर और कलीसिया की ओर स्वर्ग की परछाई और पूरा होने की ओर ध्यान दिलाते हैं। यहां तम्बू की बात की गई है न कि मन्दिर की, क्योंकि मूल में यही ढांचा था जिसकी नकल मन्दिर में की गई थी।

''पवित्र स्थान'' पूरे तम्बू को इस के दोनों भागों सहित कहा गया है। चर्च बिल्डिंग (यानी गिरजा घर) ''पवित्र स्थान'' नहीं है, क्योंकि ऐसी इमारत कभी भी उस उद्देश्य से पवित्र नहीं है जिस के लिए इस का इस्तेमाल होता है। ''पवित्र'' परमेश्वर के लोगों की मण्डली कलीसिया (चर्च) है न कि हाथों से बनाई हुई इमारत।

आयत 2. इस आयत का आरम्भ उस सामान की सूची के साथ होता है जो तम्बू के दोनों कमरों में होता था। पहला तम्बू पहले कमरे या पवित्र स्थान को कहा गया है। इस के अन्दर रखी चीज़ों में सोने का दीवट था (निर्गमन 25:31–40; 37:17–24), जो कुन्दन सोने का बना

था और जिसकी सीधे डण्डे के ऊपर छह भुजाएं थीं।

तम्बू का दीवट कलीसिया का आदिरूप हो सकता है, जो संसार में सुसमाचार की ज्योति को चमकाती है। हर मण्डली को सुसमाचार को फैलाना चाहिए। इसी प्रकार हर मसीही को चमकना चाहिए (मत्ती 5:14-16)। जकर्याह 4:1-6 में नबी ने दीवट का एक दर्शन देखा था जिसमें स्वर्गदूत द्वारा उसे बताया गया, ''यहोवा का यह वचन है।'' दीवट का तेल पवित्र आत्मा को दर्शाता हो सकता है, जो कलीसिया में वास करता है।[2]

अगली चीज़ें मेज़, और भेंट की रोटियां (''पवित्र की गई रोटी''; NIV) बताई गई हैं। इस्राएल के हर गोत्र (एप्रैम और मनश्शै के गोत्र की गिनती करके परन्तु लेवी के याजकीय गोत्र की नहीं) के लिए एक-एक के हिसाब से मेज़ पर बारह रोटियां रखी जाती थीं। मेज़ को मूलतया ''रोटियों का रखा जाना'' कहा जाता था। परमेश्वर की उपस्थिति के निकट इसे पर्दे के पास रखा गया था। (RSV, NRSV और ESV में ''हज़ूरी की रोटी'' है; इब्रानी भाषा में यह मूलतया ''चेहरे की रोटी'' है।[3]) रोटी छह-छह रोटियों की दो कतारों में रखी जाती, जिसमें प्रत्येक कतार के ऊपर लोबान का कटोरा रखा जाता था (लैव्यव्यवस्था 24:5-9)। एक सप्ताह पुरानी हो जाने पर, सब्त के दिन याजक इसे खा लेते थे।

परम पवित्र स्थान (9:3-5)

[3]और दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्र स्थान कहलाता है। [4]उसमें सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिसमें फूल-फल आ गए थे और वाचा की पटियां थीं। [5]और उस के ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित के ढकने पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक-एक करके बखान करने का अभी अवसर नहीं है।

आयत 3. दूसरे परदे को परमेश्वर और मनुष्यों के बीच रुकावट को दर्शाता माना जाता है। इस कारण यह परमेश्वर की इच्छा में था कि मन्दिर का पर्दा यह दिखाते हुए कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग खुल रहा है, मसीह की मृत्यु के समय फट गया (मत्ती 27:51)। अपनी मृत्यु के समय प्रतीकात्मक अर्थ यीशु ने परम पवित्र स्थान में प्रवेश किया और परमेश्वर ने पर्दे को फाड़कर इसकी पुष्टि की।[4] यह जैसे भी हुआ हो पर पर्दे का फटना यह दिखाता था कि पिता तक पहुंचने का मार्ग, बल्कि एकमात्र मार्ग यीशु ही है (यूहन्ना 14:6; देखें इब्रानियों 4:14-16)।

आयत 4. सोने की धूपदानी लेखक द्वारा दूसरे पर्दे के भीतर रखी गई लगती है। यह निर्गमन 30:6-8 का उलट होगा, जहां कहा गया था कि धूपदानी पर्दे के सामने थी। LXX में अस्पष्ट है कि किस वेदी की बात की गई है, परन्तु यह निर्गमन वाली धूप की वेदी जैसी ही है, सम्भव है कि इब्रानियों के लेखक के मन में प्रायश्चित के दिन की बात थी। उस दिन धूप परम पवित्र स्थान में चढ़ाए जाने के कारण धूपदानी निरंतर इस्तेमाल की जाती थी। पर्दा पीछे खींचे जाने पर धूपदानी परम पवित्र स्थान में दिखाई देती थी।

वाचा का संदूक पूरी तरह से सोने से ढका हुआ था और उस पर एक ढकना था जिसे ''प्रायश्चित का ढकना'' कहा जाता था। इस प्रायश्चित के ढकने पर ईश्वरीय उपस्थिति को दिखाता हुआ *shekinah* था।[5] ''संदूक'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''*ark*'' लातीनी भाषा के शब्द *arca* से लिया गया है, जिस का अर्थ है ''पेटी।'' संदूक की सामग्री में दस आज्ञाओं वाली पट्टियां (या तख्तियां) थीं।[6] सुलैमान के समय तक इसमें केवल यही रह गई थीं। इन पट्टियों का क्या बना उस के बारे में उसी प्रकार पता नहीं है, जैसे यह पता नहीं है कि वाचा का संदूक कहां है। 1 राजाओं 8:9 से संकेत मिलता है कि पेटी में कुछ और भी था। सोने का मर्तबान या सुराही जो संदूक में थी, लम्बे समय से गायब थी; परन्तु जंगल में घूमने के समय से इसमें मन्ना था और वह मन्ना कभी खराब नहीं हुआ था (निर्गमन 16:32-34)।[7] हारून की छड़ी जिसमें फूल-फल आ गए थे और उसमें बादाम लग गये थे, भी उसमें थी (देखें गिनती 17:1-11)। वह छड़ी इस बात का संकेत थी कि हारून महायाजक होने के लिए याहवेह का चुना हुआ है।

वाचा का संदूक स्पष्टतया बाबुल की दासता के समय खो गया था (586 ई.पू.)। पवित्र शास्त्र में इस का अन्तिम उल्लेख 1 राजाओं 8:9 में मिलता है (देखें 2 इतिहास 5:10)। 63 ई.पू. में परम पवित्र स्थान में ज़बर्दस्ती घुस आने के बाद, रोमी सेनापति पौंपे चकित रह गया था कि संदूक इस में नहीं था।[8] संदूक के न होने पर, उस स्थान को ''नींव का पत्थर'' नामक तख्ती रखकर चिह्नित किया जाता था।[9]

आयत 5. तेजोमय करूब प्रायश्चित के ढकने पर छाया किए हुए थे (देखें निर्गमन 25:18-22; 37:7-9)। ये सोने की दो मूर्तियां थीं, जो शायद स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के आस-पास रहने वाले स्वर्गदूतों की प्रतीक थीं। 1 शमूएल 4:4 में परमेश्वर को अदृश्य उपस्थिति के रूप में दिखाया गया है, जो ''करूबों के ऊपर विराजने वाला'' है। करूबों को परमेश्वर के किसी भी दिशा में अपनी इच्छा से मुड़ने के माध्यम के रूप में (सांकेतिक भाषा में) दिखाया जाता है (यहेजकेल 10:10-14; देखें 1:5-14)। दो बड़े करूब सुलैमान के मन्दिर में रखे गए थे (1 राजाओं 6:23-27)। ऐसी आकृतियों को घड़ी गई मूर्तियां क्यों नहीं माना जाता था? उत्तर शायद उन के अत्यधिक प्रतीकात्मक होने में है। वे ''... जो आकाश में या पृथ्वी पर या पृथ्वी के जल में है'' किसी चीज़ के जैसे नहीं थे (निर्गमन 20:4; व्यवस्थाविवरण 5:8)। असल आकृतियां वास्तविकता को दिखाने के लिए अपर्याप्त होंगी।

पुराने नियम में ''तेज'' को बादल के साथ जोड़ा गया था, जो तम्बू में प्रायश्चित के ढकने पर ठहरा था जिस से परमेश्वर की उपस्थिति का संकेत मिला था।[10] ''प्रायश्चित के ढकने'' (*hilastērion*) शब्द पाप के लिए प्रायश्चित के माध्यम का सुझाव देता है। ''प्रायश्चित'' करने का अर्थ ''मनाना या अनुकूल बनाना'' है। पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर यीशु का लहू बहने देकर धर्मी रह सकता था ताकि ''उस के लहू में'' विश्वास के द्वारा लोगों को धर्मी मान सके (देखें रोमियों 3:25)। इस प्रकार इस शब्द में पापों को ''ढकने'' या क्षमा का संकेत है। यह इस बात का संकेत देता है कि हमारे पास ''पवित्र परमेश्वर [है जो] पापी मनुष्य से मिलकर उस का उद्धार करेगा।''[11]

लेखक इन्हीं बातों से बढ़कर और बखान करने का इच्छुक नहीं था। वे सभी बातें पृथ्वी की थीं और जल्द ही खत्म हो जानी थीं।

प्रायश्चित का दिन (9:6, 7)

6ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं। उस पहिले तम्बू में याजक हर समय प्रवेश
करके सेवा के कार्य सम्पन्न करते हैं, 7पर दूसरे में केवल महायाजक वर्ष भर में एक ही
बार जाता है; और बिना लोहू लिए नहीं जाता; जिसे वह अपने लिए और लोगों की भूल
चूक के लिए चढ़ाता है।

आयतें 6, 7. याजक प्रतिदिन दीपकों को ठीक करने और सजाने के लिए सुबह शाम धूप जलाने के लिए मन्दिर में प्रवेश करते थे (निर्गमन 30:7, 8; लैव्यव्यवस्था 24:3, 4)। उन्हें केवल पवित्र स्थान में प्रवेश करने की अनुमति थी, परन्तु आम यहूदी इस जगह नहीं जा सकते। जकर्याह को याजकाई का काम करने का सम्मान मिला हुआ था, जब लूका 1:9–20 में स्वर्गदूत ने उस से बात की थी। वर्ष भर में एक ही बार याजक मन्दिर के दूसरे भाग[12] अर्थात परम पवित्र स्थान में प्रायश्चित के दिन की शर्तों को पूरा करने के लिए जाता था।

प्रायश्चित के दिन (योम किप्पुर) की गतिविधियों का वर्णन लैव्यव्यवस्था 16 में दिया गया है। यह दिन तिशरी के दसवें दिन जो लगभग सितम्बर के महीने में आता है, वार्षिक रूप में पड़ता था। महायाजक वर्ष में एक दिन जब परम पवित्र स्थान में जाता था तो वह उस दिन तीन बार प्रवेश करता होगा: पहली बार प्रायश्चित के ढकने पर धूप जलाने के समय, फिर अपने स्वयं के पापों के लिए बछड़े का लहू लेकर और अन्त में लोगों की भूल-चूक के लिए प्रायश्चित करने के लिए बकरे का लहू लेकर जाता था।[13] हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि पुरानी वाचा के अधीन पाप तब क्षमा किए जाते हों जब "पूरी जानकारी" के साथ या जान-बूझकर या ढिठाई भरे विद्रोह से वे पाप किए गए हैं। *मिशनाह* में कहा गया है, "यदि कोई कहे, 'मैं पाप करूंगा और मन फिरा लूंगा, और फिर पाप करके मन फिरा लूंगा,' तो उसे मन फिराने का कोई अवसर नहीं दिया जाएगा। [यदि वह कहे], 'मैं पाप करूंगा और प्रायश्चित के दिन प्रायश्चित हो जाएगा,' तो प्रायश्चित के दिन कोई प्रायश्चित प्रभावी नहीं होता।"[14] इब्रानियों 6:4–6; 10:26–29 में यही झलक मिलती है। कुछ लोग पाप में इतना डूबे हुए होते हैं कि उन्हें इस के परिणामों का पता तो होता है पर फिर भी वे गिरावट वाले पथ पर ही चलते हैं। इस के विपरीत "भूल-चूक" के वास्तविक पाप हैं, जिन्हें "जान बूझकर" के पापों से अलग किया जाना आवश्यक है। अज्ञानता या ज्ञान को तय करने का काम केवल परमेश्वर का है, जो क्षमा दिलाने या अनन्त दण्ड दिलाने का कारण बनती है।

पुरानी वाचा के अधीन किए जाने वाले बलिदान पाप के लिए प्रायश्चित होते थे, परन्तु उन से पाप मिटता नहीं था। मसीह का पवित्र करने वाला और उद्धार करने वाला काम प्रायश्चित के दिन यहूदी महायाजक द्वारा किए जाने वाले काम से बढ़कर और उत्तम है।

केवल छापें और दृष्टांत (9:8–10)

8इस से पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक पहला तम्बू खड़ा है, तब तक

पवित्र स्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ। [9]यह तम्बू वर्तमान समय के लिए एक दृष्टान्त है; जिसमें ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिनसे आराधना करने वालों के विवेक सिद्ध नहीं हो सकते। [10]क्योंकि वे केवल खाने-पीने की वस्तुओं, और भांति-भांति की विधि के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिए नियुक्त किए गए हैं।

आयत 8. पर्दे के खुलने या हटाए जाने से परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग साफ़ हो गया है। मूसा को व्यवस्था और तम्बू के लिए सारे संस्कार पवित्र आत्मा ने ही दिए थे। इस संस्कार का वास्तविक अर्थ इब्रानियों की पुस्तक में यहां मिलता है, इसे भी आत्मा की ओर से दिया गया था। वास्तव में पवित्र शास्त्र की ईश्वरीय प्रेरणा के लिए बड़ा सम्मान इब्रानियों की पुस्तक से बढ़कर किसी पुस्तक का नहीं है। उसी पवित्र आत्मा ने जिस ने मन्दिर के डिज़ाइन और निर्माण का निर्देश दिया था, नये नियम के लेखकों के साथ-साथ पुराने नियम के लेखकों को भी प्रेरणा दी थी (2 पतरस 1:20, 21)।

इब्रानियों की पुस्तक को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि तम्बू के सम्बन्ध में पुराने नियम के धर्मशस्त्र का एक बड़ा गौण अर्थ था जो हमें नये नियम की आराधना के महत्व को समझने में सहायता कर सकता है। पवित्र पर्वत पर मूसा को कुछ दिखाया गया था जिसे उस ने दृष्टांत की नकल यानी तम्बू में वफ़ादारी से बना दिया (देखें निर्गमन 25:40; इब्रानियों 9:8, 11, 23, 24)।

जब तक पुराना प्रबन्ध पूरा नहीं हुआ तब तक यह स्पष्ट नहीं था कि लोगों का उद्धार कैसे होगा या वे धर्मी कैसे ठहराए जाएंगे, जिस से स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकें। अनुवादों से यह संकेत मिलता है कि जब तक मन्दिर **खड़ा** था तब तक किसी को स्वर्ग का मार्ग पता नहीं चल सकता था। एक बेहतर अनुवाद का सुझाव दिया गया है: "जब तक पहला तम्बू किसी तरह खड़ा है।"[15] आयत 8 कहती है कि "पवित्र स्थान" (जिसका अर्थ "परम पवित्र स्थान" है) इस बात का संकेत देता था कि जब तक "बाहरी तम्बू खड़ा था" तब तक स्वर्ग में जाने का मार्ग पता नहीं था। यानी पुराने प्रबन्ध पर निर्भर रहने वाला व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में सच्चे मार्ग को ढूंढ़ नहीं सकता था। प्रतिबिम्ब या परछाई को पकड़े रखकर कोई वास्तविकता को पकड़ नहीं सकता था। इब्रानी मसीही लोगों के लिए व्यवस्था के साथ चिपकने का अर्थ अपने उद्धार को खतरे में डालना था।

परम पवित्र स्थान में केवल महायाजक ही जा सकता था, जो प्रतीक के अर्थ में दिखाता था कि तब स्वर्ग में प्रवेश का ढंग स्पष्ट नहीं था। वह अस्पष्टतया सांकेतिक रूप में पर्दे के फटने के साथ खत्म हो गई। व्यवस्था के अधीन उद्धार पाने वाले लोग छुटकारा पाने की उम्मीद में जीवित थे। मसीह की मृत्यु के द्वारा यह कैसे पूरा होना था यह बात उसकी मृत्यु और प्रेरितों के उस के काम को समझाने तक रहस्य ही बनी रही।

आयत 9क. परम पवित्र स्थान में झांकने की अयोग्यता (आयत 8) मसीही युग (वर्तमान "समय" या "युग") के लिए "छाप" या दृष्टांत[16] थी। मूसा का युग कई रूपों और प्रतिबिम्बों की पोटली थी, जो कलीसिया में पूरे होते हैं। मसीह की मृत्यु के समय पर्दे का फटना असली परम पवित्र स्थान में जाने का मार्ग खुलने का पता देता था (देखें मत्ती 27:51; मरकुस 15:38;

लूका 23:45)। यह इस बात का संकेत है कि मसीह के अपना लहू बहाकर, स्वर्ग में इसे चढ़ाने के बाद तक महिमा का मार्ग पूरी तरह से प्रकट नहीं किया गया था। प्रेरितों 2 अध्याय में प्रेरितों ने बिना किसी अलंकारिक भाषा के स्पष्ट घोषणा कर दी कि उद्धार कैसे पाया जा सकता है (प्रेरितों 2:36-38)। हमें स्वर्ग में प्रवेश दिलाने के लिए पर्दा फट गया है। वह मार्ग पूरी तरह से स्पष्ट हो गया है।

उस मार्ग को यीशु की फटी हुई देह (पर्दे) ने खोल दिया (इब्रानियों 10:20)। कलीसिया या मसीह की देह क्रूस पर मसीह की मृत्यु से पहले अस्तित्व में नहीं थी। उसकी कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों अर्थात उस समूह से बनती है, जो पहले खोया हुआ था, परन्तु अब छुटकारा पाई हुई आत्माएं हैं, जो यीशु के लहू के द्वारा खरीदे जाने से पहले कलीसिया में प्रवेश नहीं कर सकते थे (प्रेरितों 20:28)। परमेश्वर ने अपने असली महायाजक मसीहा के लिए हमारा छुटकारा दिलाकर महिमा के पर्दे के भीतर जाना सम्भव बनाया। ''इस्राएल में तम्बू, और बाद में मन्दिर, इस्राएल के इतिहास के दौरान, मन्दिर के पर्दे के गिरने तक सबक बना रहा।''[17]

आयत 9ख. व्यवस्था के अधीन आराधना करने वाले का विवेक पाप से छूटने के सही अर्थ में सिद्ध नहीं हो सकता था। ''बिना संदेह के परमेश्वर तक पहुंचने और उसे स्वीकार्य सेवा और आराधना पेश करने के लिए व्यक्ति को विवेक के शुद्ध होने पर स्वतन्त्र किया जाता है।''[18] यहां ''विवेक'' शब्द का अर्थ सम्भवतया पाप की ''जागरूकता'' है और इस प्रकार ''घायल विवेक'' है। ''परेशान विवेक वाले पाठक को पवित्र शास्त्र की किसी और जगह से इब्रानियों की पुस्तक से अधिक सहायता मिल सकती है।''[19] वास्तव में 9:14 में यह लगता है कि लेखक परेशान विवेक वाले हर पुरुष और स्त्री को सहायता की पेशकश करना चाहता था। यहूदी व्यक्ति को लग सकता है कि योम किप्पुर की भेंट चढ़ाने के बाद उस का विवेक शुद्ध है। शायद उसे लगता था कि उस के पाप उस दिन मिटा दिए गए हैं, जबकि वह अभी भी पाप में था।

आयत 10. किसी का विवेक आज सचमुच में शुद्ध बपतिस्मे में मसीह के आज्ञापालन के द्वारा हो सकता है (1 पतरस 3:21)। इस कार्य के द्वारा हम जान सकते हैं कि हमारे पिछले पाप अब नहीं रहे हैं। यीशु उस उद्धार और शुद्धिकरण का मार्ग है, जो हमें परमेश्वर तक ले जाती है (यूहन्ना 14:6)। व्यवस्था पापों की पूर्ण क्षमा नहीं देती या दिलाती; यह केवल सांकेतिक या सांस्कारिक क्षमा की पेशकश करती थी। इसमें शारीरिक नियम थे; इसकी विभिन्न स्नान विधियां आत्मा को शुद्ध नहीं कर सकती थीं।

ऐसी बातें केवल ''प्रतिबिम्ब'' (आयत 9) (कुलुस्सियों 2:14-17) थीं या जो **सुधार** (*diorthōsis*) के समय तक रहनी थीं। ''सुधार'' के लिए इस शब्द का अर्थ ''जो अपनी मूल अवस्था से गिर गया है, उसे सीधा करने के लिए'' हो सकता है और इस का अर्थ टेड़े हुए अंग को फिर से सीधा करना भी हो सकता है।[20] यह उस समय यानी नई वाचा के समय का संकेत देता है जब ''सब कुछ ठीक हो जाएगा।''[21] इस शब्द का अर्थ ''नया प्रबन्ध'' (NIV) भी हो सकता है। यह यीशु द्वारा बताई गई ''नई सृष्टि'' के समय जैसा अधिक लगता है (मत्ती 19:28)। यीशु ने चाहे अलग शब्द (*palingenesia*) का इस्तेमाल किया, पर वह इस से मेल खाती अवधारणा को ही दिखा रहा हो सकता है। बाद वाला यह शब्द आत्मिक नये जन्म का सुझाव देता है जो सब लोगों के लिए लागू हो सकता है जबकि ''सुधार'' इब्रानियों की पुस्तक

में इस्तेमाल के लिए इसे उपयुक्त बनाते हुए जीने का यहूदी ढंग हो सकता है। यह वह समय था जब चीज़ें ''सही हो जानी'' थीं; यह तब तक नहीं हो सकता था जब तक राज्य में प्रवेश के लिए सब आत्माओं के लिए ''सुसमाचार के युग'' का द्वार खुल न जाता।

मसीह की मृत्यु और प्रायश्चित (9:11-15)

हमारे महायाजक के रूप में मसीह का प्रकट होना मसीही विश्वास की मूल सच्चाई है। जिस प्रकार पुरानी वाचा का महायाजक पवित्र स्थान में से होकर जाता था, यीशु वास्तविक पवित्र स्थान में से होकर गया है। वह पिता की उपस्थिति में है, जो सचमुच में परम पवित्र स्थान में बैठा है। हमारे नये महायाजक को पुराने प्रतिबिम्बों की अब कोई आवश्यकता नहीं है।

9:11–15 के इस हवाले को ''इब्रानियों की पुस्तक का हृदय'' कहा जा सकता है।[22] यीशु का लहू इस की सुनहरी डोरी अर्थात इस का मुख्य विषय है। इस का अध्ययन करते हुए आइए पूछते हैं कि ''यीशु ने अपने लहू के द्वारा हमें क्या दिया है?''

मसीह के प्रायश्चित की श्रेष्ठता (9:11–14)

[11]परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं। [12]और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। [13]क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख का अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिए उन्हें पवित्र करता है। [14]तो मसीह का लोहू जिस ने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।

आयतें 11, 12. पहले हम देखते हैं कि मसीह के बलिदान ने हमारे लिए अनन्त छुटकारा दिलाया है। इन आयतों का एक ही वाक्य बन जाता है परन्तु उस वाक्य में नये और गम्भीर विचार है जो हमारे लिए इसे ध्यान से पढ़ना अनिवार्य बना देते हैं।

आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं मूलतया ''के साथ में आना'' (*paraginomai*) है। कई संस्करणों में ''आ गई हैं'' है, जो दो प्रारम्भिक हस्तलिपियों पर आधारित अनुवाद है। लेखक ''अच्छी-अच्छी वस्तुएं जो पहले से हैं'' की बात कर रहा था।[23] बी. एफ़. वैस्टकोट ने ज़ोर देकर कहा है कि मसीह अच्छी-अच्छी बातों का महायाजक है जो ईश्वरीय शर्तों के पूरा होने से पहले ही मिल चुकी हैं, न कि भविष्य की प्रतिज्ञाएं। उस ने आगे कहा, ''लोगों ने चाहे अपनी मीरास में प्रवेश न किया हो पर यह पहले से मिल गई है।''[24] अच्छी-अच्छी वस्तुएं मसीह के प्रथम आगमन से आ गई थीं। ''आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुएं'' वाक्यांश ''सुधार के समय'' (आयत 10) से मेल खाती हैं जो कि अपने लाभों के साथ मसीही युग को कहा गया है।

मसीह महायाजक होकर आया, जिस का अर्थ प्रथम आगमन से बढ़कर हो सकता है। केवल जन्म लेने के विपरीत "आया" या "प्रकट हुआ" और इस प्रकार हमारा महायाजक बनने के बड़े उद्देश्य के लिए उस ने संसार में प्रवेश किया। "हमारा ... महायाजक" है (8:1), इस कारण स्वाभाविक ही है कि हमें वे आशिषें पहले से मिल गई हैं जो उस ने हमारे लिए प्राप्त की हैं। उस ने उन बाधाओं को हटा दिया जो व्यवस्था ने हमारे रास्ते में रखी थीं, यानी व्यवस्था की शर्तें जिनसे सिद्धता असम्भव हो गई थी। उस ने उन्हें बीच में से हटाकर अपने क्रूस पर कीलों से जड़ दिया (कुलुस्सियों 2:14)।

और भी बड़े और सिद्ध तम्बू किसे कहा गया है? पुरानी वाचा में "इस जगत का पवित्र स्थान" था (आयत 1), परन्तु नई वाचा स्वर्ग की है। जगत का तम्बू स्वर्ग के तम्बू का रूप ही था। परम पवित्र स्थान स्वर्ग को दर्शाते हुए और तम्बू के पवित्र स्थान को पृथ्वी पर परमेश्वर के वास स्थान अर्थात अपने लोगों में जो कि कलीसिया है, को दिखाने का बेहतरीन ढंग लगता है (देखें इफिसियों 2:19–22; 1 पतरस 2:5)। यीशु ने कहा कि उस का राज्य "इस संसार का नहीं" है (यूहन्ना 18:36)। उस के सांसारिक मन्दिर का स्थान अब उस मन्दिर ने ले लिया है, जो हाथ का बनाया हुआ नहीं है।[25] स्तिफनुस और पौलुस दोनों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि परम प्रधान हाथ की बनाई किसी इमारत में वास नहीं कर सकता (प्रेरितों 7:48; 17:24)। सुलैमान को भी इस सच्चाई का पता था (1 राजाओं 8:27)। परमेश्वर उन लोगों में और उन के साथ रहता है जिन का चरित्र सही है, जिस के लिए पश्चात्तापी और दीन मन सबसे बुनियादी गुण हैं (यशायाह 57:15; भजन संहिता 51:16, 17)।

जिस प्रकार महायाजक के लिए लोहू लेकर पवित्र स्थान में जाना आवश्यक था। वैसे ही यीशु ने अपने ही लोहू के द्वारा [स्वर्ग] में प्रवेश किया (इब्रानियों 9:12)।[26] उस ने किसी पशु या किसी मनुष्य का लहू नहीं चढ़ाया। अपना ही लहू चढ़ाने के कारण मसीह को प्रवेश करने और अनन्त छुटकारा प्राप्त करने की अनुमति मिली। "छुटकारा" (*lutrōsis*) का इस्तेमाल दासों और बन्दियों को छुड़ाने की कीमत चुकाने के लिए होता था। इसमें चुकाई गई कीमत के द्वारा प्राप्त किए गए छुटकारे का विचार है (1 पतरस 1:18–20)। हमारा छुटकारा अनन्तकाल के लिए है क्योंकि परमेश्वर "[हमारे] पापों को फिर स्मरण" न करेगा (8:12)। पाप को मिटाना बकरों और बछड़ों के लोहू के लिए कभी सम्भव नहीं था (देखें 10:4)।

आयत 13. दूसरा, यीशु का लहू शुद्ध विवेक देता है। आयतें 13 और 14 में हम फिर इब्रानियों में "छोटे से बड़े" का विशेष तर्क देखते हैं। यदि लाल **कलोर की राख** के साथ पानी (देखें गिनती 19:1–10) से शरीर सांस्कारिक रूप में शुद्ध हो सकता था, तो परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू सचमुच में और भी कितना अधिक शुद्ध कर सकता है? यहूदी आराधकों को जो अपने आपको अधिक आत्मिक मानते थे, समझ आ गया होगा कि उन के सांस्कारिक रूप में शुद्ध किए जाने से वे आत्मिक रूप में पूरी तरह से शुद्ध नहीं हुए थे। प्रायश्चित के दिन भेंट चढ़ाने का कुछ लाभ तो था चाहे यह अस्थाई और बाहरी शुद्धता ही थी। बलिदानों का परिणाम यह था कि अशुद्ध व्यक्ति तम्बू/मन्दिर से कटता नहीं था, जिससे वह परमेश्वर के साथ वाचा के अपने सम्बन्ध को बरकरार रख सकता था।

ऐसे बलिदान बार-बार चढ़ाए जाने आवश्यक थे। किसी के अशुद्ध हो जाने पर हर बार

जानवर को मारने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि याजक पानी के साथ मिलाने के लिए राख तैयार रखते थे। वे जूफ़ा की डाली को घोल में डुबोकर इसे अशुद्ध व्यक्ति पर छिड़कने के लिए तैयार रहते थे ताकि वह मण्डली के साथ आराधना कर सके।[27] आयत 21 में फिर से बलिदान के लहू के ''छिड़के'' (*rhantizō*) जाने की बात कही गई है।[28] शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र किया जाना नैतिक गंदगी के बजाय सांस्कारिक गंदगी को साफ़ करना था। उदाहरण के लिए पुरानी वाचा में मृत देह को छूने या शव वाली इमारत में रहने पर शुद्ध किया जाना आवश्यक था। आज भी यहूदी अस्पतालों के बाहर परम्परागत या रूढ़िवादी यहूदियों को यह संकेत देने के लिए कि उस दिन कोई मृत्यु हुई है, चिह्न लगाए जाते हैं, ताकि रब्बियों को पता चल जाए और वे उस इमारत में जाकर अपवित्र न हों। पुराने नियम की केवल ''सांस्कारिक शुद्धता'' की रस्में ''तुम्हारे विवेक को शुद्ध'' नहीं कर सकती थीं (आयत 14)।

आयत 14. इस आयत में तीन सच्चाइयां निकलती हैं। पहली, यीशु ने अपने आपको चढ़ाया। दूसरी, उस ने सिद्ध बलिदान किया क्योंकि वह निर्दोष था। तीसरा, उस ने अपना बलिदान सनातन आत्मा के द्वारा चढ़ाया। यूनानी वाक्यांश में कोई उपपद नहीं है। परन्तु अंग्रेज़ी के सभी अनुवाद इसे ''द होली स्पिरिट'' या ''द इटर्नल स्पिरिट ऑफ़ क्राइस्ट'' मानते हैं और इस कारण उपपद जोड़कर ''आत्मा'' ''*spirit*'' शब्द को बड़े अक्षरों में लिखते हैं। इस कथन से यह दावा करना सही नहीं है कि पवित्र आत्मा ने कलवरी पर यीशु की मृत्यु में उसकी सहायता की। यदि ऐसा होता तो क्रूस पर त्याग दिए जाने के उस के शब्द किसी काम के न होते (मत्ती 27:46)। निश्चय ही मसीह ने जो कुछ भी पृथ्वी पर किया वह पवित्र आत्मा की इच्छा से मेल खाता था जो यहां पर भी यही अर्थ दे सकता है।

आत्मा के क्षेत्र में मसीह के अपने ईश्वरीय स्वभाव की बात के रूप में बेहतर ढंग इस वाक्यांश को मान लेना है।[29] यीशु का शरीर में जन्म लेना पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था (लूका 1:35) और यीशु ने कहा कि वह ''परमेश्वर की आत्मा की सहायता से'' दुष्टात्माओं को निकालता था (मत्ती 12:28)। एक और सम्भावित अर्थ यह है कि उस का बलिदान शारीरिक नहीं था, बल्कि अवश्य आत्मिक था।[30] यह आयत यशायाह 42:1 की ओर संकेत कर सकती है: ''मैंने उस पर आत्मा रखा है।''[31] बात यह है कि मसीह ने जो कुछ वह कर रहा था, उसकी पूरी समझ के साथ अपना बलिदान दिया, जो कि कोई जानवर कभी नहीं दे सकता था। उस ने अपने आपको बलि किया। ''किसी और बलि ने और निश्चय ही किसी और महायाजक ने ऐसा कभी नहीं किया। यह स्वेच्छा से और पहले से ठानकर हुआ था।''[32] पशुओं में अपनी ''आत्मा'' नहीं होती जिस से वे अपने शरीरों को बलि करने के लिए खुद को दे सकें, परन्तु यीशु ने दिया। वह क्रूस पर स्वेच्छा से गया।

वह ''निर्दोष'' था जिस का अर्थ यह है कि उसमें कोई पाप नहीं था जिस से उस का प्राण दागी हो। ''निर्दोष'' के लिए (*amōmos*) शब्द, LXX में इस्तेमाल किया गया शब्द ही है (लैव्यव्यवस्था 1:3, 10; देखें 1 पतरस 1:19)। विवेक को शुद्ध करने का अर्थ आत्मा को दोष से शुद्ध करना था। मसीह का लहू उस काम को अब भी पूरा करता है (1 यूहन्ना 1:7)।[33]

मसीह का लहू वाक्यांश इब्रानियों की पुस्तक में केवल यहीं पर इस्तेमाल हुआ है (चाहे 10:19 में ''यीशु के लोहू'' का इस्तेमाल हुआ है)। दोष मिटाए जाने और यह समझ आ जाने

पर कि उसे क्षमा कर दिया गया है, व्यक्ति अन्त में विश्वास के द्वारा परमेश्वर का सामना करने के भय से मुक्त हो सकता है। निर्दोष लोगों को क्यों डरना चाहिए? विश्वास के द्वारा यह जानते हुए कि परमेश्वर के सामने उसमें कोई दोष नहीं है, व्यक्ति हर विपत्ति में शांत और खामोश हो सकता है।

वाचा के बाहर व्यक्ति के सब काम, और परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की जो नई वाचा के द्वारा उसे मिलता है, मरे हुए काम ही हैं (6:1 पर चर्चा देखें)। हमें दी गई धार्मिकता जो मसीह में हमें मिली है की तुलना में, इन कामों का कोई महत्व नहीं है। इस "मरे हुए होने" के कई कारण दिए गए हैं। (1) पाप में रहने वाला व्यक्ति परमेश्वर के प्रति मरा हुआ है, क्योंकि वह खोया हुआ, अर्थात मसीह के बाहर है। ऐसा व्यक्ति "जीवित" काम नहीं कर सकता जो परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हैं। (2) गैर-मसीही के कर्मों से कोई "जीवित फसल" नहीं होती, बल्कि मृत्यु में अन्त होता है। (3) कर्म केवल न्याय और अनन्त मृत्यु की ओर ले जाते हैं।[34] "मरे हुए काम" पुरानी वाचा के अधीन किए गए कामों को कहा गया है, जो जीवन नहीं दिला सकते थे। यही अभिव्यक्ति "मरे हुए" (*nekros*) और "कामों" (*ergon*) के लिए दो सामान्य शब्दों के साथ 6:1 में मिलती है।

मरे हुए कामों के हट जाने के बाद व्यक्ति जीवते परमेश्वर की सेवा कर सकता है। अनुमान लगाया जा सकता है कि व्यक्ति उन के मिटाए जाने के बिना परमेश्वर की आराधना या सेवा सही ढंग से नहीं कर सकता। "सेवा" शब्द *latreuō* है जिस का अर्थ हमेशा 'धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करना' है।'[35] उन कर्त्तव्यों में "आराधना का कार्य" हो भी सकता है और नहीं भी।

बलिदानी मृत्यु और अनन्त मीरास (9:15)

[15]और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।

आयत 15. तीसरा, अपने लहू के साथ यीशु ने हमें नई वाचा दी है। पहले ही हम देख चुके हैं कि यीशु नई वाचा का मध्यस्थ है (8:6), परन्तु अब हमें पता चलता है कि उसकी इस भूमिका का अधिकार उसकी बलिदानी मृत्यु है। हम और हम से पहले कई लोग यह जानने के उत्सुक रहे हैं कि पहली वाचा के समय के मर जाने वाले विश्वासी पश्चात्तापियों का क्या हुआ। हमें पता चलता है कि मूसा और एलिय्याह महिमा के क्षेत्र में चले गए जबकि एक धनवान व्यक्ति पीड़ा के स्थान में गया था (लूका 9:28-36; 16:23-26)। वफ़ादारों को विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा धर्मी ठहराया गया, जैसा हमें भी ठहराया जाता है (उत्पत्ति 15:6 से रोमियों 4:3; याकूब 2:21-23)। *कैसे* का उत्तर इस हवाले में मिल जाता है कि यीशु हमारे साथ-साथ उन के पापों का छुटकारा पाने के लिए मरा। हमारी तरह उन्हें उस दोष और दण्ड से छुटकारा दिलाया गया है, जो व्यवस्था सब व्यवस्था तोड़ने वालों को सुनाती है। क्रूस

हर युग के सब आज्ञाकार विश्वासियों के लिए उद्धार दिलाता है। यीशु ने कहा कि हम परमेश्वर के पुराने नियम के अनुयायियों के साथ स्वर्गीय राज्य में बैठेंगे, उदाहरण के लिए "अब्राहम, इसहाक और याकूब" के साथ (मत्ती 8:10, 11)। यह सच्चाई कि यीशु ने हमारे पापों के लिए और पिछली पीढ़ियों के पापों के लिए अपना लहू बहाया, मत्ती 26:28 और 1 कुरिन्थियों 11:25 में स्पष्ट बताई गई है।

एक अर्थ में परमेश्वर एक समय के लिए पुराने नियम के विश्वासियों के पापों के ऊपर से निकल गया था (रोमियों 3:25, 26)। परन्तु उन का स्वर्गीय निवास अन्त में मसीह की मृत्यु के द्वारा सुरक्षित होता है। वह मृत्यु ही जिसमें मसीह ने स्वेच्छा से अपना लहू दे दिया, "वाचा" को मोहरबन्द करती है (मत्ती 26:28)। वाचा के साथ मृत्यु की सहभागिता पुराने समयों में पीछे ले जाती है। यह हमारे लिए नई वाचा थी, परन्तु परमेश्वर के लिए नहीं।[36] अब्राहम के साथ की गई प्रतिज्ञा उसे और हमें मसीह में प्राप्त हो गई है।

"वाचा" या "नियम" के लिए शब्द (*diathēkē*) को परिभाषित किया जाना आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक में यह मुख्य शब्द है जो यूनानी भाषा में सत्रह बार मिलता है। लेखक के मन में सीनै पहाड़ पर दी गई परमेश्वर की वाचा थी (8:8–12; निर्गमन 24:6–8)। "यह शब्द स्वयं *dia* के 'दो' होने और *tithēmi* के मूल अर्थ 'रखना' जिस का पूरा अर्थ 'दोनों के बीच रखना' होता है, *diatithēmi* से लिया गया है।"[37] LXX के अनुवादकों ने उत्पत्ति 6:18 से आरम्भ करके पूरे पवित्र शास्त्र में इब्रानी शब्द *b°rith* के लिए *diathēkē* का इस्तेमाल किया। इस शब्द का अर्थ आम तौर पर दो पक्षों के बीच समझौता था। ऐसा समझौता आम तौर पर किसी पशु की बलि देकर लहू के साथ मोहरबन्द किया जाता था।

वाचा के लिए आम तौर पर "मध्यस्थ" (*mesitēs*) "बिचौलिया" होना आवश्यक होता है। यह शब्द उपयुक्त है क्योंकि यीशु हमारा एक "मध्यस्थ" है (1 तीमुथियुस 2:5)।[38] हो सकता है कि प्रेरणा पाए हुए लेखक ने *diathēkē* का इस्तेमाल इसी कारण से किया। इब्रानियों 9:15–17 किसी की अन्तिम "वसीयत और वाचा" की अवधारणा को दिखाता है। कुछ लोगों का आग्रह है कि इब्रानियों की पूरी पुस्तक में इस शब्द का अनुवाद "वाचा" होना चाहिए; परन्तु अन्य लोग दोनों ही शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जैसे NEB में "नई वाचा या नियम" है जो कि मूल अनुवाद नहीं है। इस शब्द का नये नियम का उपयोग "सहमति या अनुबंध की तरह दो पक्षों [के बीच] समझौते के कारण नहीं बल्कि व्यक्ति की वसीयत की घोषणा" है।[39] विचार यह है कि वसीयत करने वाला व्यक्ति वारिसों द्वारा माने जाने के लिए नियम ठहरा देता है। और कहीं इस का अर्थ चाहे जो भी हो, पर 9:16, 17 में इसे "वाचा" स्वीकारा जाना आवश्यक है। यीशु चाहे नियम बनाने वाला और नियम देने वाला है और वह हमारे याचिकाकर्त्ता का काम भी करता रहता है (इब्रानियों 7:25)। लगता है कि वाचा और नियम के दोनों भाव संदर्भ में मिलते हैं। सबसे उपयुक्त विचार यह हो सकता है कि "लेखक नई वाचा बनाने में यीशु की मृत्यु की आवश्यकता को समझाने के लिए 'वाचा' और 'वसीयत' के रूप में *diathēkē* के दोनों अर्थों पर खेलता है।"[40]

बुलाए हुए लोग वे हैं जिन्होंने सुसमाचार के प्रचार के द्वारा की गई पेशकश की बुलाहट को स्वीकार किया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। आज प्रभु द्वारा या पवित्र आत्मा के द्वारा किसी

को भी सीधे या व्यक्तिगत रूप में नहीं बुलाया जाता है। पौलुस को ऐसी बुलाहट मिली थी परन्तु वह उसे केवल आज्ञापालन के लिए बुलाने के लिए नहीं बल्कि प्रेरित होने के लिए उसे योग्य बनाने के लिए थी। यदि परमेश्वर को इक्कीसवीं सदी के प्रेरितों की आवश्यकता होती तो वह उन्हें अब सीधे बुला सकता था; परन्तु तब कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की *नींव* पर" नहीं बननी थी (इफिसियों 2:20)। आज कोई भी जो ईश्वरीय "बुलाहट" की उम्मीद कर रहा है वह व्यर्थ में प्रतीक्षा कर रहा है।

जिन्होंने सुसमाचार की बुलाहट का उत्तर दे दिया है वे अनन्त मीरास को प्राप्त करेंगे। "मीरास" इब्रानियों की पुस्तक में एक सामान्य अवधारणा है।[41] यूनानी भाषा का शब्द *klēronomia* है और पौलुस के लेखों में आम मिलता है।[42] इसमें वह सब अनन्त आशिषें शामिल हैं जो मसीह में हमें मिलती हैं। वह "सारी वस्तुओं का वारिस" है (1:2), और हम उस में परमेश्वर के बराबर के वारिस बन गए हैं, जैसा कि रोमियों 8:17 में "संगी वारिस" वाक्यांश से पता चलता है। यहूदी (इब्रानी) मसीही लोगों के लिए यह अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा का महत्वपूर्ण ढंग से पूरा होना है (इब्रानियों 6:12, 15, 17)। विचार गलातियों 3:6–9, 17, 18, 26–29 वाला ही है। इसमें "परमेश्वर की छुटकारे की योजना का पूरा दायरा है जिस का आरम्भ अब्राहम से की गई उसकी प्रतिज्ञाओं से हुआ था।"[43]

तो फिर मसीह अपने लहू के द्वारा क्या लेकर आया है? उस ने हमें अनन्त छुटकारा, शुद्ध विवेक और नई वाचा दी है। आइए इस बड़े उद्धार में आनन्द करें और प्रसन्न हों।

नई वाचा के वसीयतकर्त्ता के रूप में मसीह (9:16-22)

इन आयतों में हमारे सामने चार ईश्वरीय आवश्यकताएं लाई जाती हैं। यूनानी शब्द का अनुवाद "अवश्य" इन नौ आयतों में दो बार इस्तेमाल हुआ है (आयतें 16, 23)। बहुत साल पहले एक प्रचारक ने "परमेश्वर जो नहीं कर सकता" शीर्षक से एक सरमन दिया था। एक बात उस ने निकाली कि "परमेश्वर यीशु के लहू के बिना हमारा उद्धार नहीं कर सकता।" उस ने इब्रानियों के इस भाग की चर्चा की ओर संकेत किया। नई वाचा या नियम के प्रभावी होने के लिए कुछ शर्तों का पूरा किया जाना आवयश्क है।

जब कोई वाचा प्रभावी होती है (9:16, 17)

[16]क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। [17]क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।

आयतें 16, 17. पहले हम "वसीयतकर्त्ता" (KJV) अर्थात वसीयत या वाचा (*diathēkē*) बांधने वाले की मृत्यु का होना अवश्य देखते हैं। संसार किसी वसीयत को तभी प्रभावी मानता है जब उस के करने वाले की मृत्यु हो जाती है। किसी वसीयत के प्रभावी होने के लिए वसीयतकर्त्ता की मृत्यु का प्रमाण आवश्यक है ("अवश्य" *anagkē*) शब्द का इस्तेमाल

किया गया है। *pherō* के साथ मिलकर इस का अर्थ ''ले जाना'' है, इस शब्द का अर्थ प्रमाण दिए जाने की तरह ''प्रकट करना'' होता है।[44] प्रचलित पपेरस से वसीयतकर्त्ता की मृत्यु को प्रमाणित करने की आवश्यकता के सम्बन्ध में प्राचीन दस्तावेज़ मिलते हैं।

यीशु मसीह का नया नियम या वाचा इस के संस्थापक यानी यीशु की मृत्यु के बाद प्रभावी हुआ। उस ने अपनी कलीसिया बनाने (मत्ती 16:18) और अपनी नई वाचा को प्रभावी करने की प्रतिज्ञा भी की। दोनों प्रतिज्ञाएं उसकी मृत्यु से पूरी हो गईं (देखें मत्ती 26:28)। इब्रानियों को अपने मसीहा की मृत्यु के अवश्य होने को मानने में दिक्कत थी, और यह उदाहरण उन्हें इस ''ठोकर की चट्टान'' को पार पाने में सहायता के लिए दिया गया हो सकता है (1 कुरिन्थियों 1:22, 23)।

मसीह के नियमों की प्रकृति पर ज़ोर फिर से इस तथ्य को सुनाता है कि पुराना नियम पूरा हो चुका है। अब हमारे पास मूसा की पुरानी व्यवस्था के पीछे चलने के बजाय, मानने के लिए एक नई वाचा है। यीशु की मृत्यु फसह के दौरान हुई; कलीसिया का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन सात हफ्ते बाद हुआ। कोई भी संस्थान यीशु के अपने बलिदान को पूरा करने से पहले पूरा उद्धार देने की पेशकश नहीं कर सकता था। यानी उसकी मृत्यु के समय से पहले कोई कलीसिया नहीं थी। परन्तु उस के लहू, उसकी देह के द्वारा अब कलीसिया अस्तित्व में है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23–25) इस के लोग उद्धार पाए हुए हैं।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने एक ''अनन्त मीरास'' की बात की (आयत 15)। मीरास एक उपहार होता है, जो आम तौर पर बिना वसीयत के नहीं मिलता। यीशु की वसीयत की शर्तों को पूरा किए बिना उद्धार पाने की चाह रखने वाले लोग उसकी वाचा के बाहर उद्धार पाने की कोशिश करते हैं। क्रूस पर मरने वाले डाकू को यीशु द्वारा अपने मरने से *पहले* उद्धार दे दिया गया था। मसीह जीवित था, इस कारण वह डाकू को विशेष उद्धार देने की पेशकश कर सकता था। डाकू का उद्धार यीशु की अन्तिम वसीयत और वाचा को मानने से नहीं हुआ था। इस नियम को समझने की आवश्यकता है ताकि उस के स्वर्ग में जाने के ढंग को हमारे जाने के ढंग से न उलझाया जा सके। नया नियम आज के लोगों के लिए जो जानना चाहते हैं कि उद्धार पाने के लिए क्या करें, उद्धार की योजना स्पष्टता से बताता है।

क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले यीशु ने नये जन्म के रूपक का इस्तेमाल किया था परन्तु उसकी मत्यु के बाद अपरिवर्तित पापियों को वचन सुनाने के समय किसी प्रेरित ने उस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया था। प्रभु की मृत्यु के बाद, प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल किए बिना, प्रभु की वसीयत की क्षमा की शर्तों को स्पष्ट रूप में दिया जाना आवश्यक था (मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)।

यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता है और हमें उसकी वसीयत बताई जानी आवश्यक है। हम केवल नई वसीयत की शर्तों को बताकर लोगों को उनकी आज्ञा मानने को कह सकते हैं। हम ''परखी हुई वसीयत'' के आज्ञापालन को छोड़ उद्धार का कोई आश्वासन नहीं दे सकते।[45]

हमारे वसीयतकर्त्ता मसीह की वसीयत क्या है? ''उद्धार पाने के लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक'' को छोड़ मरकुस 16:15, 16 में उस का और क्या अर्थ हो सकता था? यह उसकी वसीयत है! यदि कोई सुसमाचार की आज्ञा मानने से इनकार करे? 1 पतरस

4:16, 17 में यही प्रश्न पूछा गया था और 2 थिस्सलुनीकियों 1:6–10 में इस का उत्तर दिया गया है कि परिणाम अनन्त दण्ड है। मसीह की वसीयत हमें यह प्रचार करने की अनुमति नहीं देती कि उद्धार की एकमात्र शर्त विश्वास है। एफ. एफ. ब्रूस ने सही दिखाया कि नया नियम बपतिस्मा रहित चेले के बारे में कुछ नहीं जानता।[46]

पुराने नियम का लोहू (9:18–20)

[18]इसी लिए पहिली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई। [19]क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने बछड़ों और बकरों का लोहू लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया। [20]और कहा, कि यह उस वाचा का लोहू है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिए दी है।

आयतें 18, 19क. एक और अनिवार्यता पुराने नियम को पक्का करने के लिए लहू के इस्तेमाल की बताई गई है कि पहली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई (आयत 18)।

वह ''पहली वाचा'' क्या थी जो लहू के साथ ''बांधी गई''थी?[47] यह स्पष्ट है कि यह मूसा की वाचा थी। निर्गमन 24:1–8 इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मूसा ने भेंटों में से आधा लोहू लेकर ''वेदी पर जो उस ने सीनै पर्वत के नीचे बनाई थी फैंक दिया।''[48] इस विचार के साथ मेल खाते हुए यीशु ने ज़ोर दिया कि नई वाचा के आरम्भ के लिए उस का लहू बहाया जाएगा (मत्ती 26:28)।

क्रूस पर बहे यीशु के लहू को उस के वफ़ादार चेलों द्वारा प्रभु भोज में उसकी मृत्यु को स्मरण करने के समय हर सप्ताह याद किया जाता है (1 कुरिन्थियों 11:23–29)।[49] हम अपने पापों के लिए चुकाई गई कीमत, उस लहू की ओर पीछे मुड़कर देखते हैं जिस से हमें नई वाचा मिली है; और उस वाचा के बांधने वाले को एक दिन देखने की राह देखते हैं।

आयतें 19ख, 20. वाचा का लोहू (आयत 20) वाक्यांश निर्गमन 24:3–8 में से लिया गया है। निर्गमन में लोहू के छिड़के जाने का उल्लेख नहीं है (आयत 19ख), परन्तु तब यह सामान्य रीति थी। हम बाइबल के हर पृष्ठ पर लहू से लाक्षणिक रूप में छिड़काव किए जाने की बात पूछ सकते हैं। क्रूस की कहानी का संकेत पुरानी वाचा में कई स्थानों पर हो सकता है। पाप के हर दण्ड के पीछे दया मिलती है, जैसे दूसरों को उसी पाप और दण्ड से बचने के लिए चेतावनी है (उदाहरण के लिए, जैसे लैव्यव्यवस्था 10:1–11)। निर्गमन में पानी और लाल ऊन, और जूफा का उल्लेख है (आयत 19ख)। इन विभिन्नताओं के स्रोत हमें पता नहीं हैं; परन्तु इब्रानियों के लेखक ने किसी ऐसे स्रोत से लिया गया हो सकता है, जो अब हमारे पास नहीं है।[50] आत्मा की अगुआई में बाइबल के हर लेखक ने वही चुना जो उस के उद्देश्य से मेल खाता हो।

छिड़काव किए जाने वाले लहू को पकड़ने के लिए आम तौर पर ऊन का इस्तेमाल किया जाता था (आयत 20)। बहुत करके मत्ती 26:28 में यीशु की बात जैसा ही है। यह ध्यान देने

वाली बात है कि जोसेफ़स द्वारा पवित्रीकरण पर लिखने के समय उन्हीं चीज़ों का नाम दिया गया, जो विशेष रूप में इब्रानियों की पुस्तक में बताई गई है।[51]

बिना लहू के कुछ क्षमा नहीं थी (9:21, 22)

[21]और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। [22]और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती।

आयतें 21, 22. इन आयतों में तीसरी अनिवार्यता पापों की क्षमा के लिए लोहू बहाए जाने की आवश्यकता मिलती है। हमारे पाप यीशु की मृत्यु के बिना क्षमा नहीं किए जा सकते थे।

तम्बू पर छिड़का[व] 9:19, 20 वाली घटनाओं के कुछ देर बाद हुआ, क्योंकि व्यवस्था दिए जाने के समय यह नहीं था (देखें निर्गमन 24:1–8; 40:9–11)। मूसा उस समय सामान के छिड़काव पर खामोश था, परन्तु खामोशी इस बात का प्रमाण नहीं है कि यह नहीं हुआ।[52] यहूदियों की कई ज़बानी और लिखित परम्पराएं, जिनमें से कुछ विश्वसनीय थीं, जिन का इस्तेमाल लेखक ने किया हो सकता है। उसे गलत के प्रति चौकस रहने की ईश्वरीय अगुआई थी।

यदि पुरानी वाचा के अधीन वस्तुएं बिना लहू के शुद्ध नहीं की जा सकती थीं तो निश्चय ही हमारे लिए भी अपने पापों को शुद्ध करने के लिए लहू आवश्यक है। यहां हमें पशुओं के लहू की तुलना में यीशु के लहू के एक और ''छोटे से बड़े तक'' का तर्क मिलता है। व्यवस्था के अधीन की गई भेंट जो कि बहुत कम थी उससे पूर्ण उद्धार से कम प्राप्त होता था; जबकि नई वाचा के अधीन क्रूस पर दिए गए पुत्र का लहू पूर्ण उद्धार करता है। मसीह के लहू का बड़ा लाभ हमें अपने पापों *से* न कि उन *में* बचाता है। इस बड़े बलिदान के बिना एक भी आत्मा का उद्धार नहीं हो सकता था। इस लहू की सामर्थ केवल उन के लिए है, जो छुटकारे के लिए यीशु के पास आते हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5); यह हमारे ''ज्योति में चलते'' रहने पर हमें शुद्ध करता रहता है (1 यूहन्ना 1:7)।

लहू के शुद्ध करने वाला होने के आयत 22 के नियम के पवित्र शास्त्र में बहुत कम अपवाद दिए गए हैं, परन्तु यह एक सामान्य नियम बना रहता है। लैव्यव्यवस्था 5:11 में उस के लिए जो इतना निर्धन हो कि पाप बलि के रूप में दो पण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके, उपाय किया गया था कि वह उस के स्थान पर एपा का दसवां भाग (मैदा) चढ़ा दे (देखें लैव्यव्यवस्था 5:11–13)। परन्तु पापों की पूरी क्षमा के सम्बन्ध में अर्थात पाप से उद्धार पाने के लिए लहू बहाने को छोड़ कोई अपवाद नहीं था। क्या दूसरों के द्वारा चढ़ाया गया लहू निर्धन यहूदियों के लिए जो केवल मैदा चढ़ा सकते थे बलिदान माना जाता था? हो सकता है कि उनकी अन्न बलियों को वेदी पर लहू की पहले ही की गई बलियों के ऊपर रखा जाता हो (लैव्यव्यवस्था 5:12)।

किसी पशु के प्राण का लहू चढ़ाना इस्राएलियों को यह प्रभाव देने के लिए था कि पाप एक गम्भीर मसला है। दो बकरों का इस्तेमाल किया जाता था जिनमें एक ''बलि का बकरा'' होता

था जो सांकेतिक रूप में जंगल में पाप ले जाता था और दूसरे को काट दिया जाता था ताकि उस का लहू परम पवित्र स्थान में ले जाकर अनुग्रह के सिंहासन पर छिड़का जाए। ''दोनों कार्य ही सदा के लिए पाप उठाने और विश्वासियों को इसकी गंदगी से शुद्ध करने के रूप में यीशु की मृत्यु को दिखाने के लिए आवश्यक थे।''[53]

पानी से साफ़ करना (आयत 19), जिसे कई टीकाकारों द्वारा लहू के नियम के अपवाद के रूप में बताया गया है, लैव्यव्यवस्था 15:13–27 और गिनती 19:7–19 में मिलता है। यह ''संस्कार के साथ-साथ साफ़ सफ़ाई'' के लिए थे और ''लहू बहाने की रीति से अलग नहीं होंगे।''[54]

मसीह का परमेश्वर की उपस्थिति में जाना (9:23-28)

स्वर्गीय वस्तुओं के नमूने (9:23, 24)

[23]इसलिए अवश्य है कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा शुद्ध किए जाएं; पर स्वर्ग में की वस्तुएं आप इनसे उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जातीं। [24]क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई दे।

आयत 23क. चौथी अनिवार्यता दी गई है: इसलिए अवश्य है कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा शुद्ध किए जाएं।

एक बार फिर हम मसीह को स्वर्ग में प्रवेश करते हुए देखते हैं (आयत 24)। हम अभी भी ''इब्रानियों की पुस्तक के केन्द्र'' में हैं। ''अवश्य है'' वाक्यांश सुझाव देता है कि तम्बू के बर्तनों के शुद्ध किए जाने या पवित्र किए जाने के बिना स्वीकार्य आराधना नहीं हो सकती थी। स्पष्टतया वाचा की पुस्तक भी उस पर लहू छिड़के जाने के बिना शुद्ध नहीं होनी थी। इसलिए हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारा ''पूरा धर्मतन्त्र'' बिना लहू के व्यर्थ होना था।[55]

आयत 23ख. स्वर्ग में की वस्तुओं और उत्तम बलिदानों किन्हें कहा गया है? स्पष्टतया इन सब का अर्थ मसीह का एक बलिदान है, क्योंकि इस ने उस उद्देश्य को पूरा किया जिस की पुरानी वाचा के बलिदान केवल नकल थे। पृथ्वी के तम्बू वाली चीज़ें स्वर्गीय वास्तविकताओं के केवल ''प्रतिरूप'' थे। 8:2–5 में हमें दिखाया गया था कि पवित्र स्थान कलीसिया का और परम पवित्र स्थान स्वर्ग का प्रतिबिम्ब था।

निश्चय ही स्वर्ग को जहां परमेश्वर वास करता है, लहू के बलिदान से कुछ शुद्ध किए जाने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इन ''वस्तुओं'' में पृथ्वी की आत्मिक वस्तुओं हो सकती हैं विशेषकर कलीसिया या ''स्वर्ग का राज्य,'' जिस में उद्धार पाए हुए लोग हैं। परमेश्वर के हर बालक के लिए जो इस जीवन में स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करता है, शुद्ध किया जाना आवश्यक है, स्पष्टतया यहां पर बताए गए ढंग के अनुसार। ''स्वर्ग में की वस्तुओं'' पृथ्वी पर कलीसिया को कहा गया हो सकता है, जो कि स्वर्ग का राज्य है।[56]

इस बात को न समझकर कुछ लोग सुझाव देते हैं कि स्वर्ग में शैतान या अन्य दुष्ट स्वर्गदूतों

की उपस्थिति ने स्वर्ग को शुद्ध किया जाना आवश्यक बना दिया (देखें इफिसियों 6:12; प्रकाशितवाक्य 12:3-9)।[57] लेखक रूपक का इस्तेमाल कर रहा होगा, जिसकी हो सकता है कि हमें पूरी समझ न हो। कुछ लोगों ने यह सोचा था कि पहले उद्धार पाने वाले कुछ लोग, इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के समय महिमा में थे, इसलिए उन्हें भी पूरी तरह से पाप शुद्ध करवाना आवश्यक था। परन्तु यह विचार सही नहीं हो सकता, क्योंकि यह मसीह के लहू के पूरे प्रभाव से इनकार करता है। क्रूस पर अपना लहू चढ़ाकर यीशु उस लहू को लेकर स्वर्ग में चला गया। वहां पर वह आज हमारे प्रतिनिधि के रूप में सेवा कर रहा है।

आयत 24. ''पुराने नियम के विपरीत, विशेष प्रबन्ध के रूप में नये नियम के युग में मसीहा की वर्तमान सेवकाई'' और ''स्वर्गीय परमपवित्र स्थान में उस के अपने उपस्थित रहने'' की बात करने में विशेष महत्व हो सकता है।[58] मसीह वहां हमारे लाभ के लिए है। जैसा कि 7:25 में ज़ोर दिया गया है, वह **अब** भी हमारी ओर से काम कर रहा है।

''उत्तम बलिदानों'' (आयत 23) शब्द हमें उत्तम आशा (7:19), उत्तम वाचा (7:22; 8:6), और उत्तम प्रतिज्ञाओं (8:6) सहित इब्रानियों की पुस्तक में अन्य ''उत्तमों'' का स्मरण दिलाता है। उन सब का आरम्भ एक उत्तम बलिदान के साथ हुआ (9:23)। एक बार फिर जो कुछ मसीह ने किया है और हमारे लिए देता है उस का श्रेष्ठ होना स्पष्ट है।

आयत 24 हमें बताती है कि मन्दिर केवल वास्तविक का प्रतिरूप (*antitupos*) है अर्थात यह प्रामाणिकता की ''प्रतिनिधित्व'' है।[59] **स्वर्ग** यहां वास्तविकता थी और तम्बू पृथ्वी पर उस का प्रतिरूप।

तम्बू कलीसिया का रूप भी है, जोकि ''स्वर्गीय यरूशलेम,'' ''साधारण सभा,'' और ''सिय्योन पहाड़'' के प्रतीक ''पहलौठों की कलीसिया'' है (12:22-24)। ये सब अवधारणाएं अब कलीसिया में पूरी हो गई हैं जिस के लोगों ''के नाम स्वर्ग में लिखे गए'' हैं क्योंकि वे ''सब के न्यायी परमेश्वर के पास'' आए हैं।

कलीसिया तम्बू से कहीं बेहतर ढंग से स्वर्ग को इस के वास्तविक रूप में दिखाती है। यह स्वर्ग की असली ड्योड़ी है और इस के वफ़ादार लोग अनन्त वास्तविकता में वास करेंगे। ये सब विचार इकट्ठे बंधे हुए हैं; स्वर्ग परमेश्वर की योजना अर्थात मनुष्य के लिए छुटकारे की उसकी योजना का चर्म है।

परमेश्वर के लिए अपने लोगों को उद्धार की पेशकश करने के लिए ईश्वरीय शर्तों का पूरा होना आवश्यक था। यह सभी शर्तें मसीह के लहू के द्वारा पूरी की गईं। उसकी मृत्यु से नई वाचा प्रभावी हुई। उस के लहू में न केवल मसीही लोगों के पापों को बल्कि परमेश्वर के सिद्ध बलिदान की आशा करने वाले, साल दर साल पशुओं के बलिदान चढ़ाने वाले, पुराने नियम के विश्वासियों के पापों को भी उठा लिया। अपने लहू को स्वर्गीय बातों के ''प्रतिरूपों'' को शुद्ध करके मसीह ने हमें परमेश्वर की सचमुच की उपस्थिति में प्रवेश करने के योग्य बना दिया है।

मसीहियत को ''एक ही बार'' होने के रूप में दिखाया जाता है (10:10)। यह यहूदी मत से बड़ी है क्योंकि यह समय के अन्तिम युग के लिए परमेश्वर की अन्तिम वाचा है। इब्रानियों 9:25-28 में ''एक बार'' के इस्तेमाल पर ध्यान दें।

यीशु ने एक बार चढ़ाया (9:25, 26)

[25]यह नहीं कि वह अपने आपको बार-बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता है। [26]नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को बार-बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।

आयत 25. पुरानी और नई वाचाओं के बलिदानों में समानताएं दिखाने के बाद इब्रानियों की पत्री का लेखक भिन्नताओं पर ज़ोर देने लगा। आयत 24 भिन्नताओं के साथ आरम्भ होती है। यीशु केवल पृथ्वी पर के पवित्र स्थान में ही नहीं बल्कि स्वर्ग में गया है। वह वहां अपने आप को और अपना लहू बार-बार नहीं चढ़ाता, क्योंकि उस ने एक ही बार सदा के लिए चढ़ा दिया है। पुराने नियम का याजक दूसरे का लहू लेकर चढ़ाता था; यदि वह ऐसे चढ़ाता तो यह "पाप से दागी" होना था। इस के अलावा यदि नया प्रबन्ध पुराने प्रबन्ध जैसा होता तो यीशु को हर वर्ष क्रूस पर जाना पड़ता। इस अन्तिम भिन्नता पर अध्याय 9 के शेष भाग में ज़ोर दिया गया है।

"पवित्र स्थान" के लिए शब्द (*hagios*) यूनानी भाषा में बहुवचन है और इस का अनुवाद "पवित्रों का पवित्र" या "अति पवित्र स्थान" के रूप में व्याख्यात्मक ढंग से किया जाता है (NKJV; NIV)।[60] इस के अलावा यह संकेत देते हुए कि इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के समय महायाजक अपना काम कर रहा था, प्रवेश किया करता शब्द वर्तमानकाल में है।[61]

आयतें 25 और 26 में तीन सच्चाइयों का सुझाव मिलता है: (1) मसीह अनन्त है, (2) उस का बलिदान पिछली पीढ़ियों के पापों से निपटने के लिए पीछे तक जाता है (जैसे 9:15 में दिखाया गया है), (3) उस ने अपना ही लहू चढ़ाया, जबकि पुराने नियम का महायाजक केवल पशुओं का लहू चढ़ाता था। यह स्पष्ट है कि मसीह को बार-बार चढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी। यह वचन पाठ उस थियोलॉजी के साथ साथ जो यह दावा करती है कि मास में भाग लेना उस बार बार चढ़ाए गए बलिदान की सांसारिक विधि है, उस शिक्षा का सामना करता है कि वह स्वर्ग में अपने आपको चढ़ाता रहता है।[62] ऐसी शिक्षा इस पत्री के स्पष्ट विरोध में है। मसीह अनन्तकाल के लिए पृथ्वी पर किए गए अपने एक और एकमात्र बलिदान के आधार पर अनुग्रह के सिंहासन के सामने पेश होता है।

9:24-28 में बताए गए यीशु के तीन "प्रवेशों" को ध्यान से देखें। आयत 24 उस के स्वर्ग में प्रवेश को दिखाती है। आयत 26 दिखाती है कि "युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुआ," और आयत 28 कहती है कि वह "दूसरी बार प्रकट होगा।" यह कहकर कि "वह जो शरीर में प्रकट हुआ" (1 तीमुथियुस 3:16), पौलुस ने आयत 26 में मिलने वाले क्रिया शब्द *phaneroō* का ही इस्तेमाल किया।

आयत 26. अब युग के अन्त में "अन्तिम दिनों" के आरम्भ को ही कहा गया होगा (1:2)। स्पष्टतया जिस युग में हम रहते हैं वह संसार के इतिहास का अन्तिम काल या युगों की शृंखला में अन्तिम है।

इस वाक्यांश का संकेत वही है जो गलातियों 4:4 में है: ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ।'' यह याद करते हुए कि मसीह के संसार में प्रवेश करने पर समय ''पूरी तरह से आ'' गया था, ब्रूस ने सुझाव दिया कि इस अभिव्यक्ति का अर्थ ''पूरा होने का समय'' हो सकता है। उस ने कहा, ''यह नहीं कि मसीह समय के पूरा होने पर आया बल्कि उस के आने ने उस समय को पूरा होना दिया।''[63]

ऐसा वाक्यांश मसीही युग के बाद हज़ार वर्षीय युग के लिए कोई स्थान नहीं रहने देता। मसीह के प्रकाशन से मनुष्यजाति को परमेश्वर का अन्तिम संदेश मिल गया और सदा के लिए अन्तिम बलिदान दे दिया गया और अन्तिम समय या ''दिनों'' का आरम्भ हुआ (1:2)। ऐसा नहीं है कि मसीह पृथ्वी के इतिहास में पहले आकर बार-बार दुख नहीं उठाता है बल्कि वह ''इतिहास के चरम पर'' आया (NEB)। क्रूस वास्तव में बलिदान की हर आत्मिक आवश्यकता का अन्त या चरम था।

संसार माने या न माने पर मसीह का आना अपने लहू के चढ़ाने के कारण सारे इतिहास का केन्द्र बिन्दु है। अन्तिम कार्य यीशु के साथ क्रूस पर आरम्भ हुआ। वह सदा के लिए छुड़ाए हुओं के पाप को दूर कर देने के लिए आया। ''दूर कर'' के लिए शब्द पपेरस में ''निरस्त करना'' या ''रद्द करना'' का प्रभावशाली अर्थ है।[64] यीशु देह में पिता की महिमा को दिखाते हुए प्रकट हुआ था (यूहन्ना 1:14; 14:7-9; कुलुस्सियों 2:9)।

हम चाहे आश्वस्त हो सकते हैं कि हम अन्तिम युग में रहते हैं, पवित्र शास्त्र की ओर से हमें ऐसा कोई आश्वासन नहीं है कि हम मसीह की वापसी से बिल्कुल पहले के कुछ अन्तिम दिनों में रहते हैं। यदि यीशु को पृथ्वी पर रहते समय अपनी वापसी का समय पता नहीं था (मत्ती 24:36; मरकुस 13:32) तो हमें भी अपने समय में उसकी स्पष्ट वापसी का संकेत देते हुए ''समय के चिह्न'' पता होने का दावा करने से डरना चाहिए।

यीशु ''प्रकट हुआ,'' जिस का अर्थ है कि वह देह में आया ताकि लोग उसे देख और जान सकें (यूहन्ना 1:14)। संसार के पापों के लिए मरने के लिए उस के पास शारीरिक देह का होना आवश्यक था (इब्रानियों 2:14-17; 10:5-7)।

एक मृत्यु, उसके बाद न्याय (9:27, 28)

[27]और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उस के बाद न्याय का होना नियुक्त है। [28]वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उन के उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।

आयत 27. नियुक्त के लिए शब्द *apokeimai* वही शब्द है जिसका इस्तेमाल लूका 19:20 में ''दूर रख छोड़ा'' (NASB) या ''रखा'' (KJV) के लिए हुआ है। ''आशा जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में *रखी गई* है, की बात करते हुए कुलुस्सियों 1:5 में भी इसका इस्तेमाल हुआ है। 2 तीमुथियुस 4:8क कहता है, ''मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है।'' मुलाकात

ठहराई हुई है यानी हमारे लिए नरक का दण्ड हो या स्वर्ग की महिमा, कुछ तो "मिलने वाला" या "रखा हुआ" है।

यहां पर ज़ोर इस बात पर है कि मनुष्य एक बार जन्म लेता, एक बार जीता, एक बार मरता, और एक बार न्याय का सामना करता है, बिल्कुल वैसे जैसे मसीह एक बार बलिदान किया गया और एक बार और प्रकट होगा। लेखक यह सुझाव नहीं दे रहा था कि परमेश्वर ने वह घड़ी नियुक्त कर दी है कि हम में से हर किसी की मृत्यु कब होगी, परन्तु मृत्यु सब के लिए निश्चित है। न्याय के दिन का आतंक अपने पापों में रहते हुए अपने सृष्टिकर्त्ता का सामना करने के विचार में पाया जाता है।

आयत 28. मसीह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद आकर अपने चेलों पर एक बार प्रकट हुआ और एक बार और आ रहा है। पवित्र शास्त्र में केवल यही आयत है जहां मसीह के दूसरी बार आने या प्रकट होने की बात मिलती है। बेशक अन्य स्थानों में इस का संकेत है (प्रेरितों 1:11)। यह इस विचार के साथ मेल खाता है कि उस ने "सब के बाद (पौलुस को) ... दिखाई दिया" (1 कुरिन्थियों 15:8) और अपने द्वितीय आगमन से पहले दिखाई नहीं देगा। यह कुछ लोगों की व्यर्थ कल्पना का खण्डन करता है कि मसीह हाल ही के समयों में बार-बार दिखाई दिया है।

आखिर वह किस का उद्धार करेगा? उन का जो लोग उसकी बाट जोहते हैं।[65] हमारा व्यवहार मसीह के द्वितीय आगमन की "दिल से इच्छा करना" वाला होना चाहिए (2 पतरस 3:12; ASV)। "हे प्रभु यीशु आ" की विनती भी होनी चाहिए (प्रकाशितवाक्य 22:20)। उस घटना की जल्द घटने की सच्चे दिल से प्रार्थना के लिए कुछ बाट जोहना यानी उत्सुक्ता का होना आवश्यक है। हमें मसीह के आगमन की "बाट जोहते" रहना चाहिए (आयत 28)। कमज़ोर विश्वास वालों के लिए यह एक समस्या हो सकती है। पतरस ने संकेत दिया कि ऐसा क्या हो सकता है यदि कोई 2 पतरस 1:6, 7 वाले "मसीही अनुग्रहों" को पाने में नाकाम रहता है। अपने जीवन में मसीही विशेषताओं को बढ़ाने के लिए "यत्न" करने वाले व्यक्ति के लिए पतरस ने कहा, "अपने बुलाए जाने, और चुन लिए जाने को सिद्ध करने का भाली भांति यत्न करते जाओ क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे" (2 पतरस 1:10)। जब कोई भरोसा करने वाले विश्वास के इस स्तर तक पहुंच जाता है तो वह "परमेश्वर के उस दिन की बाट" जोहेगा और "उस के जल्द आने" की राह देखेगा (2 पतरस 3:12)। NIV में है "जब तुम परमेश्वर के दिन और इस के आने की गति की राह देखते हैं।"

क्या हम मसीह के दोबारा आने की बात से रोमांचित हो सकते हैं? क्या सचमुच हम उस के जल्द आने की आशा कर सकते हैं? यदि हां तो हम यूहन्ना के साथ प्रार्थना कर सकते हैं कि "आमीन। हे प्रभु यीशु आ" (प्रकाशितवाक्य 22:20)। पौलुस द्वारा द्वितीय आगमन के प्रति उचित व्यवहार के सम्बन्ध में संकेत दिया गया है। उस ने बताया कि "भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उस के प्रगट होने को प्रिय जानते हैं" (2 तीमुथियुस 4:8)। यदि कोई प्रथम आगमन को और हमारे लिए इसके महत्व से प्रेम रखता है तो निश्चय ही उसें यह जानने की उत्सुक्ता बढ़ेगी कि प्रभु दोबारा कब आएगा।

जो सुसमाचार की पेशकश को ठुकराता है वह अपने आपको अनन्त जीवन के अयोग्य मानता है (प्रेरितों 13:46)। जब कोई उद्धार के माध्यम के रूप में सुसमाचार को नकारता है तो वह उसे उस मानक के रूप में चुनता है जिस के द्वारा उसे दोषी ठहराया जाएगा (यूहन्ना 12:48)।

यीशु के हमारे पापों को उठाने के विचार की भविष्यवाणी यशायाह 53:10–12 में की गई थी। यह कहते हुए कि वह बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए आया, इब्रानियों के लेखक के मन में यशायाह का हवाला ही होगा। यशायाह ने लिखा था, "वह उन के अधर्म के कामों का बोझ उठा लेगा" (53:11)। आयत 28 की वह बात लगभग LXX में यशायाह 53:12 वाली शब्दावली जैसी ही है। यूहन्ना डुबकी देने वाले ने यीशु का परिचय यह कहते हुए "देखो यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29) इसी विषय के साथ करवाया था।

यीशु "सदा के लिए ही बार" मरा, हम एक ही बार मरेंगे, और मसीह एक और बार आएगा। "सदा के लिए एक ही बार" की ये बातें हमारे अन्तिम, अनन्त उद्धार की ओर संकेत करती हैं।

और अध्ययन के लिए:
क्रूस पर मरने वाला डाकू

क्रूस पर उद्धार पाने वाले डाकू की तरह उद्धार पाने की इच्छा आम तौर पर ऐसे व्यक्ति द्वारा जताई जाती है जिस ने मसीह की अन्तिम इच्छा पर विचार नहीं किया है। अपनी मृत्यु और पृथ्वी के बाद और पृथ्वी को छोड़कर जाने से पहले उस ने नई वाचा में भाग लेने के लिए कुछ शर्तें बताई:

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18–20)।
>
> तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:15, 16)।
>
> यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा (लूका 24:46, 47)।

प्रेरितों के काम में ज़ोर दिया गया है कि उसकी वसीयत लागू की गई।[66] प्रेरितों के काम के उदाहरण ज़बर्दस्त हैं; मनपरिवर्तन के हर विस्तृत मामले में बपतिस्मे का उल्लेख है। विश्वास का उल्लेख हर जगह नहीं है, चाहे हम मानेंगे कि यह आवश्यक है और प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में इस का संकेत हैं। मन फिराव का उल्लेख भी हर जगह नहीं है, परन्तु इस का संकेत हर जगह है। स्पष्टतया पानी वह तत्व है जिसमें आरम्भिक परिवर्तितों को डुबकी दी जाती

थी (प्रेरितों 8:36; 10:47)। प्रेरितों 16:33 में दारोगे द्वारा ''उन्हें'' ले जाने में डुबकी का और बपतिस्मा लेने का संकेत है। यदि बपतिस्मे के लिए पानी में डुबकी की आवश्यकता न होती तो उसका बपतिस्मा जेल में ही हो सकता था। क्या आप अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता की वसीयत पर भरोसा करेंगे या किसी ऐसे व्यक्ति पर जो आपको बताता है कि बपतिस्मा आवश्यक नहीं है?

जब यीशु जीवित था तो वह जैसे चाहे अपनी इच्छा से किसी को भी बचा सकता था। उस ने व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री को बताया था कि उसके पाप क्षमा हो गए थे (यूहन्ना 8:1-11)। उस ने लकवे के रोगी को उसे चंगा करने से पहले या उस से कुछ भी मांग करने से पहले उसे क्षमा कर दिया था (मरकुस 2:5)। परन्तु इन दोनों का उद्धार क्रूस से पहले हुआ था। यीशु की वसीयत प्रभावी नहीं हुई थी। उस के बहे लहू ने नये नियम को इसकी शर्तों के साथ पक्का कर दिया था (मत्ती 26:28)। उसी प्रकार से जब मैं जीवित हूं तो मैं जो मेरे पास है उसे कैसे भी दे सकता हूं, चाहे शर्त के साथ या शर्त के बिना। मेरे मरने के बाद, उस उपहार को पाने के लिए व्यक्ति को उन सभी शर्तों का पालन करना होगा जो मैंने अपनी वसीयत में लिखी थीं। मसीह की वसीयत में भी ऐसा ही है कि जब वह जीवित था तो उस के पास जैसे चाहता (बेशक वह उस विश्वास को देख सकता था जो उन का था) लोगों को क्षमा करने की ईश्वरीय सामर्थ थी। आज मसीह किसी से भी अपनी वसीयत को अपवाद बनाने के लिए सीधे बात नहीं करता।

क्रूस पर मरने वाले डाकू का बपतिस्मा पहले कभी हुआ था या नहीं यह बात बेमतलब है। यह हो सकता है कि उसे यूहन्ना के बपतिस्मे से उसे बपतिस्मा दिया गया हो (देखें मत्ती 3:4-6) या वह उस के चेलों के द्वारा दिए जाने वाले यीशु के बपतिस्मे को लेने आए लोगों की भीड़ में शामिल हो (यूहन्ना 4:1, 2)। तौभी वह मसीह के क्रूस पर मरने से पहले था, जबकि उद्धारकर्त्ता, हमारा वाचा देने वाला अभी जीवित था। यीशु ने उस व्यक्ति को आश्वस्त किया कि वह उसी दिन उसके पास स्वर्गलोक में होगा (लूका 23:39-43), जो इस बात का संकेत है कि वह इस घोषणा के साथ ही बचाया गया था।

यदि इस डाकू का मनपरिवर्तन पहले ही हो गया था तो हम आसानी से यह मान सकते हैं कि वह पीछे मुड़ जाने वाला व्यक्ति था, इस स्थिति में यीशु ने उस को यहां पर बहाल कर दिया। उस व्यक्ति ने उस दिन शायद रो रही कुछ स्त्रियों को छोड़, क्रूस के आस पास के अन्य लोगों से अधिक विश्वास दिखाया (लूका 23:27-31, 48, 49)। उस ने यीशु की बातों पर भरोसा किया और जो कुछ उस ने यीशु के बारे में सुना था उसे सच माना। उस ने विश्वास किया कि यीशु राजा है और उस का एक राज्य होगा! उसे इन सच्चाइयों का पता कैसे चला? क्या उस ने ''आने वाले'' इस्राएल के मसीहा के रूप में क्रूस की ओर इशारा करते यूहन्ना डुबकी देने वाले से सुना था (यूहन्ना 1:29)? हो सकता है। यदि उस ने यीशु को मसीहा के रूप में ग्रहण कर लिया था तो निश्चय ही बाद में वह रोम के विरुद्ध में शामिल हो गया था। हमें नहीं मालूम कि क्या हुआ। महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि ''डाकू को क्या करना पड़ा था?'' बल्कि यह है कि ''उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?''

हम परमेश्वर के साथ सौदेबाज़ी नहीं कर सकते या उसकी वसीयत (नया नियम) के संदेश को नरम करने या उस के मानक को छोटा करने के लिए इसमें पाई जाने वाली शर्तों को बदल नहीं सकते। या तो हम उसकी शर्तों से सहमत होकर उन्हें मान लेंगे या उन्हें ठुकरा देंगे।

उसकी आज्ञाओं की उपेक्षा करने या उन्हें माने बिना उद्धार का दावा करने का सोचना भी एक बड़ा फ़रेब होगा।

और अध्ययन के लिए: "वाचा"

इब्रानियों की पुस्तक में "वाचा" (*diathēkē*) एक महत्वपूर्ण शब्द है। पत्री में इस यूनानी शब्द के रूप सत्रह बार मिलते हैं।[67] ये शब्द *diatithēmi* से लिए गए हैं। *Dia* का अर्थ है "दो," और *tithēmi* का अर्थ है "रखना"; इस शब्द का इकट्ठा अर्थ मूलतया "दो के बीच रखना" है।[68] इस से वध किए गए पशु के अंगों के बीच में से निकालकर लहू के साथ मोहर की जाने वाली वाचा के पुराने नियम की रीति पर ध्यान आता है, जो कह रही हो कि जिस ने वाचा को तोड़ा उसे भी वैसे ही बीच में से काट डाला जाएगा।[69] (देखें उत्पत्ति 15:17; यिर्मयाह 34:18.)

एक और यूनानी शब्द *sunthēkē* का अनुवाद "वाचा" किया जा सकता है, परन्तु यह शब्द नये नियम में नहीं मिलता है। साहित्यक यूनानी लेखों में दो लोगों के बीच वाचा को आम तौर पर *sunthēkē* कहा जाता था। ऐसे समझौते दो बराबर के पक्षों में किए जाते थे, जो कि परमेश्वर के साथ वाचा कभी नहीं हो सकती थी।

इस के बजाय LXX के अनुवादकों ने उत्पत्ति 6:18 से लेकर पूरे पवित्र शास्त्र में इब्रानी शब्द *b^erith* ("वाचा") के लिए *diathēkē* शब्द का इस्तेमाल किया। यह शब्द "पूरे अधिकार वाले एक पक्ष द्वारा किए गए प्रबन्ध, जिसे दूसरा पक्ष स्वीकार या नकार सकता है, परन्तु बदल नहीं सकता" का सुझाव देता है।[70] इस उपयोग में यह शब्द "व्यवस्था" से मिलता-जुलता ही है (देखें व्यवस्थाविवरण 29:21; भजन संहिता 78:10; होशे 8:1)। ऐसी वाचा छोटे के लाभ के लिए किसी बड़े द्वारा की जा सकती है, जैसे सीनै पर्वत पर इस्राएलियों के साथ किया गया समझौता है (देखें निर्गमन 24:6-8)। इब्रानियों के लेखक के मन में 8:8-12 में यही बात थी।

Diathēkē का अनुवाद "वाचा" या "नियम" या "वसीयत" किया जा सकता है। KJV में इब्रानियों 9:16, 17 में "नियम" है जबकि NIV में "वसीयत" है। "वसीयत की कुछ बात पक्की होती है। वसीयतकर्त्ता के साथ सौदेबाजी नहीं की जा सकती। और इसी प्रकार से मनुष्य परमेश्वर के साथ सौदेबाजी नहीं कर सकता। परमेश्वर शर्तें ठहराता है।"[71]

"वसीयत" के प्रभावी होने के लिए मृत्यु होना आवश्यक है। मृत्यु परमेश्वर के लिए लागू नहीं होती इसलिए अधिकतर मामलों में *diathēkē* का उत्तम अनुवाद "वाचा" शब्द हो सकता है। परन्तु 9:16, 17 में दोनों विचार मिलते हैं, क्योंकि नई वाचा मसीह के लहू से बांधी गई थी। हमारे लिए उसकी वसीयत नये नियम में लिखी गई है।

प्रासंगिकता

मेज़ और उसकी रोटी (9:1, 2)

यहूदी याजक प्रत्येक सब्त को हजूरी की रोटी खाते थे। क्या यह उसी का रूप है जो कलीसिया के लिए प्रभु के प्रत्येक दिन करना आवश्यक है? पवित्र शास्त्र से और दूसरी सदी

की रीति से स्पष्ट है कि कलीसिया हर सप्ताह के हर पहले दिन प्रभु भोज लेती थी। वे ''सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने के लिए'' इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)। पौलुस को चाहे यरूशलेम लौटने की जल्दी थी फिर भी त्रोआस में इस अवसर के लिए उसने सात दिन तक प्रतीक्षा की (20:6, 16)। उस ने सात दिनों तक प्रतीक्षा क्यों की? क्योंकि उसे मालूम था कि मसीह की मृत्यु को याद करने के लिए, जिसने उनकी क्षमा के लिए अपना लहू बहाया था, उनकी लगातार संगति के लिए पहले दिन इकट्ठा होना कलीसिया की रीति थी (मत्ती 26:28)। इसे मनाए जाने की आज्ञा स्वयं प्रभु द्वारा दी गई थी (1 कुरिन्थियों 11:23-25)। कलीसिया के लिए जब तक वह दोबारा नही आ जाता, तब तक प्रभु की याद में भोज को खाना आवश्यक है (11:26), उसके बाद जब भोज की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसे मसीहियत के सबसे बड़े जब कि प्रभु मुर्दों में से जी उठा था, मनाया जाना स्वाभाविक ही है। प्रभु भोज उस के बलिदान (अतीत) को और उस के दोबारा आने (भविष्य) को याद दिलाते रहने का काम करता है। अनन्तकाल की बातों पर ध्यान लगाए रखने के लिए हर मसीही को इस सहायता की आवश्यकता है।

1 कुरिन्थियों 11:20 में पौलुस ने कहा, ''तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिए नहीं।''[72] ये मसीही लोग प्रभु भोज के लिए इकट्ठा होने के लिए आते थे, परन्तु उनकी विभाजित स्थिति में इसे सही ढंग से लेना सम्भव नहीं था। यदि हम नये नियम की कलीसिया को बहाल कर रहे हैं, तो प्रभु भोज की प्रथा को जारी रखने के लिए और उसे सही ढंग से करना क्या यह अब आपके लिए किसी भी प्रकार कम महत्वपूर्ण है?

पर्दे के पीछे बनाम खुलेआम (9:3)

महायाजक अपना काम पर्दे के पीछे और धुएं में छिपकर करता था। यीशु को खुलेआम क्रूस पर दिया गया। उस पर लगा आरोप तीन भाषाओं में लिखा गया ताकि सब को इसकी समझ आ जाए। उसे खुलेआम ठट्ठा किया गया। क्या यह हमारे उसे खुलेआम वैसे ही उत्तर देने को दिखा सकता है? जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि. का ऐसा ही मानना था:

> यह हमें याद दिलाने के लिए है कि परमेश्वर को हमारे समर्पण खुलेआम किए जाएं। ... लेवीय प्रबन्ध हमारे अपने समय का पूर्व-स्वाद ही था, जब बपतिस्मे में लोग खुलेआम दूसरों को बताते हैं कि उन्होंने अपने हृदय यीशु मसीह को दे दिए हैं।[73]

जिस प्रकार यीशु को खुलेआम बलिदान किया गया था, वैसे ही हमें उस के द्वारा उद्धार पाने के लिए अपने विश्वास को खुलेआम मानना चाहिए (1 तीमुथियुस 6:12-14; रोमियों 10:9, 10)।

पट्टियां और मन्ना (9:4)

बचे हुए मन्ना वाले मर्तबान के साथ, दस आज्ञाओं वाली पट्टियां जंगल में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की प्रेम पूर्वक सम्भाल को याद दिलाती थीं। अब हमारे लिए उस का प्रेम उन माध्यमों से याद किया जाता है जो उन से कहीं आगे बढ़ जाते हैं। हमारे पास मसीह की मृत्यु है जो पुरानी वाचा की

किसी भी भौतिक वस्तुओं से बढ़कर है। मृत्यु में मसीह के कार्य के कारण, ''हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं'' (रोमियों 5:11)।

तम्बू का निकाला जाना (9:6, 7)

निश्चय ही हर मसीही की इच्छा परमेश्वर के निकट आने की होती है। हमें नहीं मालूम कि यह कैसे हो सकता है परन्तु पुरानी वाचा में हर प्रकार की पाबन्दियों और सीमाओं के कारण यह लगभग असम्भव था। परमेश्वर के साथ निकट सम्बन्ध का आनन्द केवल कुछ लोगों को ही मिलता था। केवल याजक ही डेरे में प्रवेश कर सकते थे। यह इस सच्चाई पर ज़ोर देता था कि लोग अशुद्ध, अपराधी पापी हैं। महायाजक भी पापी था क्योंकि वह परम पवित्र स्थान में साल में एक बार केवल अपने पाप मिटाए जाने के बिना (सांकेतिक रूप में) प्रवेश नहीं कर सकता था। पापियों के परमेश्वर की उपस्थिति के निकट आने की अयोग्यता पर इतना ज़ोर दिया जाता था कि प्रायश्चित के दिन भी उनका भयानक दोष उन्हें परमेश्वर से दूर रखता था।

यह स्थिति व्यवस्था के अधीन आराधना के पूरे सिस्टम की अयोग्यता को दिखाती है। नये नियम में याजकों और अन्य आराधकों के बीच अन्तर को मिटा दिया गया है। हर पुरुष सार्वजनिक आराधना में अगुआई करने में भाग ले सकता है। स्त्रियां भी आराधना में भाग लेने के योग्य हैं, चाहे नेतृत्व की भूमिका में न हों (देखें 1 तीमुथियुस 2:8-15)। कलीसिया में ऐल्डरों, डीकनों और इवैंजलिस्टों जैसी सेवा की अलग अलग भूमिकाएं हैं, परन्तु इनमें से कोई भी हमारी ओर से परमेश्वर के सामने मध्यस्थ नहीं है। कुछ लोग पूर्णकालिक इवैंजलिस्ट (यानी सुसमाचार प्रचारक) हैं जिन का मुख्य काम प्रचार करना या सिखाना है, परन्तु यह दूसरों को भी प्रचार करने और सिखाने से रोकता नहीं है। हर मसीही परमेश्वर की आराधना में प्रार्थना कर सकता है, गा सकता है, चंदा दे सकता है और प्रभु भोज में भाग ले सकता है।

पवित्र स्थान का मार्ग (9:8)

लोग आम तौर पर कहते हैं कि वे बाइबल के बारे में और जानने के इच्छुक हैं; परन्तु वे पवित्र शास्त्र पर आधारित पुस्तकें पढ़ते नहीं हैं, गहराई वाली बाइबल कलासों में जाते नहीं हैं या सरमन को ध्यान से सुनते नहीं हैं। बहुत से लोग ध्यान से अध्ययन की कीमत चुकाए बिना परमेश्वर को जानना चाहते हैं। यीशु ने कहा, ''इसलिए चौकस रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो'' (लूका 8:18क)। हम अपनी ओर से कोई बलिदान किए बिना पवित्र मन्दिर में ले जाए जाकर परमेश्वर से मुलाकात चाहते हैं, परन्तु यह इतना आसान नहीं है। परमेश्वर के वचन को सीखने के लिए सच्चे दिल से अपने आपको देने वाला व्यक्ति यह नहीं पूछता कि ''क्या आप परमेश्वर को ढूढ़ने में मेरी सहायता कर सकते हैं?'' क्योंकि उस ने उसे पहले ही पा लिया है। बहुत से आयतों को याद करने वाले लोग, हो सकता है कि हमेशा सबसे बड़े भक्त न हों, परन्तु मेरा विश्वास है कि जो व्यक्ति अपनी वर्तमान परिस्थिति या परीक्षा के अनुकूल उपयुक्त वचन पर विचार कर सकता है, उसे उस से जो ध्यान से अध्ययन नहीं करता या ध्यान से सुनता नहीं है, कहीं अधिक परमेश्वर के निकट आने की समझ है। एक बार एक स्त्री ने एक प्रचारक से कहा, ''जितनी बाइबल आपको आती है उतनी सीखने के लिए मैं अपना आधा जीवन दे सकती।''

प्रचारक ने उत्तर दिया, ''अच्छी बहन, इसकी यही कीमत चुकानी पड़ती है।'' हम कभी भी इतने व्यस्त न हों कि पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने के लिए हमारे पास समय न हो। इस से भी बुरी स्थिति कलीसिया के एक अगुवे द्वारा दिखाई गई थी जिस ने कहा था, ''हमें बाइबल के वचन का अध्ययन करने की आवश्कता नहीं है। हमें पता ही है।'' अपने आपको ''ग्रहण योग्य'' दिखाने के लिए ''अध्ययन करना'' (KJV) या ''प्रयत्न करना'' आवश्यक है (2 तीमुथियुस 2:15)। ''सत्य के वचन'' को सही ढंग से इस्तेमाल में लाने के लिए सीखने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। हम इसे सारा कभी नहीं जान सकते हैं, परन्तु वचन को और सीखकर हम अनुग्रह के सिंहासन के और निकट हो सकते हैं (इब्रानियों 4:15, 16)।

परमेश्वर के साथ निकट सम्बन्ध के लिए जो कुछ भी हमें वास्तव में आवयश्कता है वह मसीह में उपलब्ध करवाया गया है (मत्ती 6:33; फिलिप्पियों 4:10–14)। हम आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं ताकि हम उस के निकट हो सकें। यीशु ने सामरी स्त्री को बताया था कि परमेश्वर चाहता है कि लोग उसकी आराधना ''आत्मा और सच्चाई से'' करें (यूहन्ना 4:23, 24)। इब्रानियों की पुस्तक लोगों को बताती है कि परमेश्वर को ढूंढ़ने का रास्ता मसीह के बलिदान की स्वीकृति के द्वारा है।

पुराने नियम के प्रतीक (9:10)

बाइबल के रूपों और प्रतिरूपों पर सबक किसी समय सुनने में आते रहते थे। इस स्पष्ट संदेश को कि पुराना और नया दोनों नियम उसी परमेश्वर की ओर से और उसी आत्मा के द्वारा दिए गए, बार–बार इस बात को देखना कि पुराना नियम किस प्रकार से नये नियम में मिल जाता है, अद्‌भुत विश्वास दिलाने वाला हो सकता है। परन्तु हमें चाहिए कि पुराने नियम के इतिहास की हर घटना या व्यवस्था के अधीन परमेश्वर की आराधना की हर बात के अर्थ के सम्बन्ध में सजावटी विचार न बनाएं। फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस द्वारा इस खतरे को बाखूबी समझाया गया था: ''... प्रतिरूप वर्गीकरण के सम्बन्धित महत्वों की इच्छा करना गलत नहीं है। परन्तु कुछ सीमाएं ठहराई जानी आवश्यक हैं, वरना अधिक कल्पना हर प्रकार की अनावश्यक व्याख्याओं का कारण बन सकती है, और बहुत बार बनी भी है।''[74]

अच्छे अध्ययन करने के लिए पवित्र शास्त्र में काफ़ी कुछ सुझाया गया है। यशायाह 7 में एक बालक के जन्म की भविष्यवाणी में यहूदा के छुटकारे का सुझाव था और इससे भी बड़ा, गौण अर्थ मसीह के कुंवारी से जन्म की ओर संकेत करता था (यशायाह 7:14; मत्ती 1:20–23)। मूसा छुड़ाने वाले के रूप में यीशु का नमूना था (प्रेरितों 7:37; व्यवस्थाविवरण 18:15–18)। इब्रानियों की पुस्तक में यह संकेत दिया गया है कि इसहाक का बलिदान मसीह और उस के पुनरुत्थान का संकेत था (इब्रानियों 11:17–19)। याद रखें कि पूरी तरह से कोई भी नमूना नये नियम में अपने पूरा होने के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाता है। हम महत्वपूर्ण, तुलनात्मक बिन्दुओं पर फोकस करें।

परन्तु इस सावधानी पर ध्यान देने के बाद हम आराधना के लिए तम्बू में प्रवेश करने से पहले वेदी पर चढ़ाए जाने वाले बलिदान और कलीसिया का भाग बनने से पहले मन फिराव के बीच जबर्दस्त समानता देख सकते हैं। हौदी के पानी में याजक का पांव धोना नये नियम

का याजक बनने के लिए जल में बपतिस्मा लेने की तस्वीर को दिखाता है। पवित्र रोटी का साप्ताहिक खाया जाना हमारे प्रभु भोज को साप्ताहिक रूप में लेने और बाहरी पवित्र स्थान में से परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने को स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए कलीसिया में प्रवेश करने की झलक प्रतीत होता है। यह सुन्दर उपमाएं हैं, परन्तु हमें बाइबल के प्रकट किए गए ''रूपों'' यानी ''नमूनों'' और अपनी उपमाओं में अन्तर को समझना आवश्यक है। रूपों और उपमाओं के द्वारा डॉक्ट्रिन को समझाया जा सकता है परन्तु यह उन पर आधारित नहीं होनी चाहिए। हम अपनी डॉक्ट्रिन को नये नियम की स्पष्ट आयतों से ले कर अपनी बात को समझाने के लिए उपमाओं का इस्तेमाल करें।

शराब पीने के लिए कोई नियम नहीं? (9:10)

कुछ लोगों का विचार है कि पुरानी वाचा में नाज़ीरों को (जिन्हें मदिरा पीने की मनाही थी; गिनती 6:2-21) छोड़ किसी और पर शराब पीने की कोई पाबन्दी नहीं थी। यह बिल्कुल सच नहीं है। नादाब और अबीहू के धूपदानी में कोयलों से अनाधिकृत आग लाकर परमेश्वर के नियमों को तोड़ने के थोड़ी देर बाद (लैव्यव्यवस्था 10:1-3), दाखमधु या मदिरा पीने के सम्बन्ध में एक नियम दिया गया था। मूसा ने कहा कि तम्बू के निकट आने वालों के द्वारा परमेश्वर को अत्यधिक सम्मान दिया जाए और ''पवित्र'' माना जाए (10:3-7)। नादाब और अबीहू अपने असावधानी के कारण यहोवा की ओर से निकली आग से भस्म हो गए थे, और हारून को इन दोनों पुत्रों पर शोक करने की अनुमति नहीं थी (लैव्यव्यवस्था 10:1-7)।

उस के बाद परमेश्वर ने सेवा करने वाले याजकों के लिए एक नया नियम दे दिया। उन्हें तम्बू में सेवा करने के समय ''दाखमधु और मद्यपान'' करने की मनाही थी (लैव्यव्यवस्था 10:8-11)। इस का अर्थ है कि नादाब और अबीहू इतने मूर्ख थे कि वे पीकर आराधना में आ गए थे जो अधिकृत नहीं था। सामान्य ज्ञान और परमेश्वर के लिए भक्ति से होना यह चाहिए था कि कोई याजक नशे की स्थिति में सेवा न करे। परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के लिए नशे में गुर होना कोई बहाना नहीं था इस कारण वे दोषी थे।

यही नियम आज लागू होता है। उदाहरण के लिए कोई शराबी ड्राइवर अपनी गाड़ी से जब किसी को कुचल डालता है तो उसे उस का ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। पीना आरम्भ करने से पहले उसे इतना होश था कि उसे मालूम था कि क्या हो सकता है।

मसीह के लिए सबसे बड़ा दिन (9:11, 12)

अपनी मृत्यु के समय प्रभु अपने पिता से तीस से अधिक सालों से दूर रहा था। अब अपना लहू बहाकर और हमारा छुटकारा प्राप्त करके वह महिमा में स्वर्ग में लौट सकता था। स्वर्गदूत कैसे आनन्द से चिल्लाएं होंगे! पृथ्वी के अपने मिशन के बाद महिमा में मसीह के लौटने को भजन संहिता 24 से दिखाया जा सकता है:

हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो,
हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ,

क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!
वह प्रतापी राजा कौन है?
परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है,
परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है।
हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो,
हे सनातन के द्वारो तुम भी खुल जाओ,
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!
वह प्रतापी राजा कौन है?
सेनाओं का यहोवा,
वही प्रतापी राजा है (आयतें 7-10)।

यीशु असली और महिमामय तम्बू यानी परमेश्वर के वास स्थान में गया। बाइबल के प्रतीकों को ध्यान में रखते हुए हम उस के पिता के अनुग्रह के सिंहासन पर, जहां से हर प्रकार का असली अनुग्रह मिलता है, लहू छिड़कने की कल्पना कर सकते हैं। पिता का जवाब है "मैं उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा" (यिर्मयाह 31:34)। मन्दिर के बाहर खड़ा होकर महायाजक के बाहर आने की प्रतीक्षा करने को स्वर्ग के इस दृश्य के साथ नहीं मिलाया जा सकता!

हमें दोष में बने रहने की आवश्यकता नहीं है (9:11, 12)

अब हमें परमेश्वर से दूरी पर नहीं रखा गया बल्कि अब हम विश्वास में उस के निकट हैं। मसीही व्यक्ति के लिए यह सोचने का कि वह दूर है (प्रेरितों 17:27, 28) या दोष में जीवन बिताने का, कोई कारण नहीं है। हमारे दोष को यीशु के छुटकारा दिलाने वाले लहू के द्वारा मिटा दिया गया है! बेशक हम पौलुस के साथ आनन्द के साथ गा सकते हैं, चाहे पौलुस की तरह हम अन्दर से अपने आपको पापियों में सबसे बड़ा मानें (1 तीमुथियुस 1:15)। पौलुस ने अतीत को "भुलाकर" आगे बढ़कर मसीह के भावी काम के लिए परिश्रम करता था (फिलिप्पियों 3:12-16)। दमिश्क के मार्ग पर यीशु का दर्शन पाकर (प्रेरितों 9; 22; 26), उस का पूरा जीवन ही विरोधाभासी बन गया था क्योंकि उसे क्षमा कर दिया गया था, उस का उद्धार हो गया था और वह छुड़ाया हुआ पापी बन गया था। उस ने अपनी पिछली बड़ी भूलों को माना जो कुछ उसकी ओर से मसीह ने किया था उस के कारण उस ने पिछले पापों से उसे निराशा में नहीं ले जाने दिया (गलातियों 2:20)।

इस लाभ को स्वीकार करना या न करना हमारी पसन्द है। कोई हमारे लिए इस पसन्द को चुन नहीं सकता है। हम "जो चाहे आ सकता है" समूह में हैं (देखें प्रकाशितवाक्य 22:17; KJV)। हम पसन्द चुन सकते हैं। जब हम विश्वास करते हैं तो हमें "परमेश्वर की संतान होने का अधिकार" दिया जाता है (यूहन्ना 1:11, 12)। ऐसा नहीं है कि हमारे मनों में विश्वास होने से हमारा उद्धार हो जाता है, बल्कि हमें उद्धार पाने का अवसर दिया जाता है। गाड़ी की टिकट खरीदना यात्री को किसी दूसरे नगर में नहीं ले जाता; बल्कि इस से वहां पहुंचने का साधन मिल जाता है क्योंकि उसे गाड़ी में बैठने का अधिकार मिल गया है। इसी प्रकार से विश्वास आत्मिक यातायात का माध्यम देता है। हम इस जीवन में रहते हुए अनन्त उद्धार के स्थान पर नहीं पहुंचते

परन्तु हम इसकी ''आशा में'' रहते हैं (तीतुस 1:2)। हमारी अनन्त मंज़िल हम पर निर्भर है कि हम कहां पर पहुंचना चाहते हैं। मसीह का आज्ञापालन और विश्वासयोग्यता हमें उस के साथ जाकर रहने का अधिकार देते हैं (इब्रानियों 5:8, 9)।

आज छुटकारा क्या है? (9:12)

''छुटकारा'' के लिए *lutrōsis* शब्द में इसके गुलामों की मण्डी होने की गंध है, क्योंकि यह बंधुआ दास को छुड़ाने के लिए लागू होता है। संसार के अधिकतर भागों में, गुलामी की प्रथा अब बीते समय की बात हो गई है, परन्तु इस से होने वाले आतंक और अपमानजनक परिणाम कभी खत्म नहीं हो सकते।

''मसीही'' नाम अपनाने वालों को बचे हुए जातिवाद पर विजय पाने के लिए सैन्यवादी सक्रियतावाद का सहारा नहीं लेना चाहिए। मार्टिन लूथर किंग, जूनि., ने सब जातियों के ''भाइयों'' के बीच समानता लाने के लिए अहिंसा की वकालत की। यीशु मसीह द्वारा दिलाया गया छुटकारा सब लोगों को मुक्त कर देता है। हर बात में जीवन के अपने नमूने के लिए हमें यीशु की ओर पीछे को जाना आवश्यक है। उसकी शिक्षा दासत्व से मुक्ति और स्वतन्त्रता दिलाती है।

सब मसीही स्वतन्त्र हैं, क्योंकि ''अपने ही लहू के द्वारा'' मसीह ने हमारे लिए ''अनन्त छुटकारा प्राप्त किया'' है। बदले में हम आज्ञाकारी सेवकों बल्कि मसीह यीशु के कैदियों के रूप में रहना चुनते हैं (देखें इफिसियों 4:1-3)।

''बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं'' (9:13-22)

यह हवाला छुटकारे की सुसमाचार की कहानी का केन्द्र बिन्दु बनाता है। इस के कहने का अर्थ स्पष्ट है कि लहू बहाय बिना पापों की क्षमा नहीं होती है (आयत 22)। हम कह सकते हैं कि यह इब्रानियों की पुस्तक और पूरी बाइबल का ही मुख्य विषय है। हमारा उद्धार हमारी अपनी भलाई से नहीं होता; बल्कि यीशु के लहू के द्वारा प्राप्त किया जाता है। आयत 15 कहती है कि छुटकारा उपलब्ध है क्योंकि ''मृत्यु हुई है।''

पुराना नियम बताता था कि ''शरीर का प्राण लहू में रहता है'' (लैव्यव्यवस्था 17:11, 14)। डॉक्टरों ने केवल 19वीं शताब्दी में इस विचार को बंद किया कि शरीर से ''गंदा लहू'' निकाल दिया जाए, यह ऐसी अवधारणा थी जो आंशिक रूप में जॉर्ज वाशिंगटन की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार थी। चिकित्सकीय ज्ञान की उन्नति से खून चढ़ाने के द्वारा बहुत सी जानें बचाई जा सकती हैं।

रिटन इन ब्लड नामक अपनी पुस्तक में रॉबर्ट ई. कॉलमैन ने एक भाई और बहन की कहानी बताई जिन्हें एक ही तरह की खून की अजीबो गरीब बीमारी थी। लड़का ठीक हो गया परन्तु उसकी बहन बीमारी से ठीक नहीं हो पाई। डॉक्टरों ने निर्णय लिया लिया कि भाई का प्रतिरक्षित लहू ही उसकी बहन को बचा सकता था। एक डॉक्टर ने लड़के को समझाया कि उसकी बहन कितनी बीमार है; उस ने उसे बताया कि अपना लहू देकर वह उसकी जान बचा सकता है। उस ने पूछा, ''क्या तुम अपना लहू दोगे?'' उस छोटे लड़के के होंठ कांप उठे परन्तु उस ने कहा, ''हां, मैं दूंगा।'' उसे एक और कमरे में ले जाया गया और खून चढ़ाया जाने लगा। उसकी बहन के शरीर में जान लौट आई जैसे कि चमत्कार हो गया हो। थोड़ी देर के बाद डॉक्टर

आया तो लड़के ने पूछा, "डॉक्टर साहिब, मैं कब मरूंगा?"[75] उसे लगा था कि अपनी बहन को खून देने से उसकी जान चली जाएगी। कोई आश्चर्य नहीं है कि उस के होंठ थरथराए थे!

यीशु ने हमारे लिए यही किया; क्रूस पर उस का शरीर कंपकपाया होगा। उसे मालूम था कि वह हमारे लिए अपना लहू देने के लिए मरेगा। हमें अनन्त लहू चढ़ाया गया है। मसीही लोगों को यीशु के लहू के द्वारा बचाया गया है! इस बहुमूल्य दान को हम कभी कम न समझें (देखें इब्रानियों 10:29)। उस ने कितनी बड़ी कीमत अदा की है!

उस का अपना लहू (9:22, 25)

किसी भी कलीसिया या प्रचारक को जो क्रूस की कहानी न बताए और हमारे उद्धार के लिए यीशु के बहे लहू को आवश्यक न बताए, उसे सुनना बेकार है। लहू का महत्व 9:22 में देखा जाता है: "सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।" आयत 25 हमें याद दिलाती है कि महायाजक लहू लेकर पवित्र स्थान में जाता था। बहुत से लोगों के लिए लहू एक भयानक विचार है। हम में से कई लोगों के अपने ही लहू को देखकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं और उनका रंग उड़ जाता है; किसी दूसरे के बहे लहू को जिस से उसकी मृत्यु हो गई हो, देखना दिल हिला देने वाला है। यह बात और भी सच हो जाती है जब हमें यह मालूम हो कि मरने वाला निर्दोष था। क्या हमारे लिए लहू हमारे परमेश्वर के सामने पाप से घृणित होने से भी बढ़कर है? क्रूस और यीशु का बहा लहू दिखाते हैं कि पाप कितना भयानक है।[76] पाप मृत्यु की मांग करता है और मृत्यु तब होती है जब शरीर में लहू नहीं रहता। यदि हमें अपने पापों के लिए हम अनन्तकाल के लिए मर न रहे होते तो मसीह को दोषियों के लिए निर्दोष के रूप में मरना न पड़ता (2 कुरिन्थियों 5:18-21)।

पवित्र शास्त्र में लहू का अर्थ हिंसात्मक रूप में ली गई जान है। लहू का बलिदान जीवन हासिल करने का माध्यम हो सकता था और जीवन दिला सकता था जब बलिदान किया जाने वाला बलिदान के योग्य हो-जैसे यीशु था क्योंकि वह निष्पाप था (1 पतरस 1:18, 19; 2:21-23)। नया नियम यह सुझाव नहीं देता कि लहू का बलिदान अपने आप में किसी दूसरे की जान को छुड़ा लेता है बल्कि मसीह की मृत्यु और उस के लहू के बलिदान के लाभों के कारण उस के शारीरिक जीवन का अन्त हुआ परन्तु उस के बलिदान में सारी मनुष्यजाति के लिए आत्मिक छुटकारे का साधन जुटाया।

कुछ साल पहले, कुछ धार्मिक संगठनों ने अपनी गीतों की पुस्तकों में से यीशु के प्रायश्चित के लहू के सब हवाले निकालने का फैसला किया। उन्हें लगा कि यह हवाले उन के आधुनिक, कोमल हृदय सदस्यों के लिए जो नहीं चाहते थे कि कोई किसी भी कारण से मरे, ठोकर का कारण थे। (कुछ लोग जो यह वकालत करते थे कि जानवरों को भी मनुष्यों की तरह जीने के अधिकार हैं, इस कारण उन्हें भी किसी दूसरे के लाभ के लिए मरना नहीं चाहिए।) उन्हें लहू बहाए जाने की बात असभ्य लगी; यह उनकी भावनाओं से नीचे था। इन संगठनों ने नरक, न्याय और पाप के बारे में भी प्रचार बहुत कम कर दिया। हाल ही के एक इवैंजलिकल पत्रिका ने ध्यान दिलाया है कि अधिकतर प्रचारक अब न्याय का प्रचार नहीं करेंगे, "इसलिए नहीं कि उन का विश्वास नहीं है बल्कि इसलिए क्योंकि उन के सुनने वाले इसे सहेंगे नहीं।"[77] इसी प्रकार

से कलीसिया में पाप को बुरा नहीं कहा जा सकता क्योंकि हमें डर है कि लोगों को बुरा लगेगा। पाप घिनौना है! इस के कारण परमेश्वर के इकलौते पुत्र का लहू बहाटा!

जब हम पाप के सबसे बड़े बलिदान, मसीह के लहू पर समझौता करते हैं तो जल्द ही हम पाप पर अपने प्रचार पर समझौता करने लगते हैं और कलीसिया बेदीनी यानी विश्वासत्याग में चली जाती है। हम पाप को केवल इसलिए गलत कहने से न बचें कि लोग कहेंगे, "आप कट्टर कलीसिया हैं! आप सदस्यों से बहुत ऊंचे मापदण्ड की मांग करते हैं। आप मसीह जैसे नहीं हैं क्योंकि आप पापियों को क्षमा नहीं कर पाते।" यदि हम बाइबल के अनुसार होने की कोशिश नहीं कर रहे तो फिर प्रचार ही क्यों करते हैं? हमें पश्चात्तापी लोगों के प्रति दयालु होकर उन्हें स्वीकार करना आवश्यक है, परन्तु नर्मी की ओर इतना न बह जाएं कि पाप से हम वैसे नाराज़ न हों जैसे हमारा परमेश्वर होता है।

पाप को दूर कैसे करें (9:26)

न तो कभी सरकार द्वारा पारित किए गए किसी कानून में और न किसी अदालत के फैसले में कभी सुना गया कि पूर्ण क्षमा देने के द्वारा पाप को दूर किया जा सकता है। कोई अदालत किसी मामले के मनुष्यघातक होने का भी फैसला दे सकती है परन्तु आरोपी व्यक्ति को फिर भी लग सकता है कि वह किसी हत्या करने का दोषी है। मनुष्य द्वारा दी गई क्षमा दोष की क्षमा नहीं कर सकती या उसे मिटा नहीं सकती। दूसरों के किए कामों के लिए किसी का भी अंगीकार सचमुच में क्षमा या दोष से मुक्ति नहीं दिला सकता। भयंकर रूप में पाप करने और अपने परिवारों को उजाड़ देने वालों के मन से उस हानि के लिए दोषपूर्ण भावनाओं को मिटाया नहीं जा सकता जो उन्होंने की है। केवल परमेश्वर ही किसी पापी को क्षमा करके उसे स्वीकार कर सकता है, और उस के लिए वह मन फिराव की मांग करता है (लूका 13:3, 5)। वह मसीह के द्वारा, जो हमारे वचन पाठ के अनुसार "प्रकट हुआ है ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे" क्षमा करता है। परमेश्वर के बिना हम अपने दोष को मिटा नहीं सकते। केवल उसी में पूर्ण क्षमा है। अपनी कोशिश से हम इसे दिमाग से निकालना आरम्भ भी नहीं कर सकते।

अन्तिम अप्वॉयंटमैंट (9:27)

अप्वॉयंटमैंट जो हम सब को माननी पड़ेगी वह मृत्यु के साथ मुलाकात है। "मनुष्यों के लिए एक बार मरना नियुक्ति है।" इस नियुक्त से कोई बचाव नहीं है। कुछ लोग जीवन में ठीक ठाक होने पर लगता है कि इसे भूल जाते हैं। यीशु ने एक आदमी के बारे में बताया जो एक साल में बड़ा समृद्ध हो गया था। यह सोचने के बजाय कि प्रभु के काम के लिए और कैसे दिया जा सकता है, वह अपनी रिटायरमैंट की पार्टी देने और आगे के आरामदायिक समय की बातें सोचने लगा। उसे निवेश या दिवालियपन की चिंता नहीं होनी थी। वह धनवान था। वह इतना समझदार था कि अपने आपको आर्थिक सलाह दे सकता था। किसान होने के कारण उस ने निर्णय लिया कि उसे अपने अनाज को रखने के लिए बहुत से गोदामों की आवश्यकता है ताकि उनके खाने के लिए बहुत सालों के लिए अनाज हो। परन्तु वह गलत था। परमेश्वर ने वास्तव में उस से यह कहते हुए बात की, "हे मूर्ख! *इसी* रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा" (लूका 12:15-21)।

केवल एक न्याय (9:27, 28)

9:27, 28 में ''रैप्चर'' के लिए समय क्यों नहीं दिया गया? क्या यह हो सकता है कि ऐसी कोई घटना न हो? ''उठा लिए'' (''रैप्चर'' का मूल लातीनी अर्थ) शब्द 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में मिलते हैं (देखें आयतें 13–18)। पवित्र लोगों को ''उठा लिया'' जाएगा ताकि वे ''सदा प्रभु के साथ'' रह सकें। साढ़े तीन या सात वर्षों के किसी थोड़ी देर के समय की कोई बात नहीं। वचन पढ़ें! यह ''गुप्त और खामोश'' घटना नहीं है। प्रिमिलेनियलिस्टों यानी हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों का इस आयत का विचार सचमुच में काल्पनिक है।

यीशु न्याय करने के लिए आएगा न कि एक और बलिदान देने के लिए, यदि उसे फिर से बलिदान देने के लिए आना होता तो इस से उस का पहले किया गया बलिदान अपर्याप्त साबित होगा (आयत 27)। यह विचार कि सारी मनुष्यजाति का अन्तिम न्याय होगा आम तौर पर तुच्छ मानी जाने वाली शिक्षा है पर कुछ सच्चाइयां बाइबल में बिल्कुल साफ़ बता दी गई हैं (यूहन्ना 5:28, 29; 12:48; प्रेरितों 17:30, 31; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11–15)। पौलुस के होने वाले न्याय पर बात करने में फेलिक्स को भयभीत कर दिया था (प्रेरितों 24:25)। क्या फेलिक्स इतना भयभीत होता यदि उसे लगता कि हमें केवल इसी जीवन में न्याय का सामना करना पड़ेगा? क्या वह कांप उठना था (KJV) यदि पौलुस अन्त में सब उद्धार की शिक्षा देता? पौलुस ने ऐसे विचारों का प्रचार नहीं किया।

यीशु एक दिन वापस आएगा (यूहन्ना 6:39, 40, 44)। वह धर्मियों को मरे हुओं में से जिलाएगा और उन का पूर्ण उद्धार करेगा, जिसका संकेत पृथ्वी पर उस के आरम्भिक काम से दिया गया था (आयत 28)। मसीही लोगों को चाहे पिछले पापों के दोष से तुरन्त शुद्ध कर दिया जाता है (2 पतरस 1:9), परन्तु इस के साथ ही हम ''अनन्त जीवन की आशा में'' भी रहते हैं (तीतुस 1:2)। एक अर्थ में मसीह में होने के कारण विश्वास के द्वारा हमें वह जीवन पहले ही मिल चुका है; परन्तु उस जीवन की पूरी वास्तविकता हमें उस के द्वितीय आगमन पर ही मिलेगी। अब इस जीवन में वास्तव में हमारा उद्धार हुआ है, और जब तक मसीह में बने रहते हैं जब तक हमें अनन्त जीवन मिला है। यूहन्ना 3:16; 5:24 पढ़ें जहां क्रिया काल का अर्थ है कि हम अपने उद्धार को पकड़े रखने के लिए ''विश्वास करते रहें।'' विश्वासी बने रहना इस बात की गारंटी देता है कि हम मसीह में बने रहेंगे, जो वह दायरा है जिसमें विश्वास के द्वारा अब हमें उद्धार मिला है। यूहन्ना 3:16 ''नाश न हो'' या ''नाश नहीं होना चाहिए'' (KJV) शब्दों का प्रयोग करता है। ''नाश न हो'' सही है यदि कोई विश्वास करता रहता है, क्योंकि अनन्त जीवन पाने और पाए रखने के लिए यह आवश्यक है।

उत्सुकता से यीशु की प्रतीक्षा करना (9:28)

यदि हमारा विश्वास वही है जो होना चाहिए, तो हम उत्सुक्ता से अपने प्रभु के दूसरी बार आने की राह देखेंगे। प्रचार में द्वितीय आगमन पर ज़ोर दिया जाना चाहिए और इस से हमें मिलने वाले आनन्द को दिखाया जाना चाहिए। हमें आनन्द के साथ उस क्षण की राह देखनी चाहिए।

छोटे बच्चों और जीवन का आनन्द भोग रहे लोगों के लिए इस संसार के दुख के कारण इसे छोड़ने की इच्छा करने की कल्पना करना कठिन है। जैसे जैसे हम बड़े होते और जीवन को

और देखते हैं वैसे वैसे युद्ध, बीमारी, हत्या और प्राकृति आपदाओं जैसी वैश्विक घटनाएं हमें वास्तविकता में चौंका सकती हैं। हमारे हर तरफ़ शत्रु हैं। परमेश्वर की इच्छा के बजाय शैतान की इच्छा को पूरी करने के इच्छुक बहुत से लोग मसीहियत का खात्मा चाहते हैं। आर्थिकता के सम्बन्ध में हमें अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य, प्रसन्नता और हमारे बच्चों की वफ़ादारी; जीवन की व्यक्तिगत सफलता; और अन्य किसी भी प्रकार की चिंता का सामना हमें करना पड़ता है। हमें इन सब बातों से निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि मसीह सब कुछ ठीक करने के लिए आ रहा है। हमें उन से जो हमारे साथ बुरा करते हैं व्यक्तिगत बदला लेने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर हमारा बदला लेने वाला है (रोमियों 12:18–21)। बदला लेना प्रभु का काम है; उसी को बदला लेने दें। बदला लेने का अर्थ अपने आपको बुराइयों से दबा लेना है। यीशु के आने की उत्सुक्ता से राह देखना संसार की सभी परेशानियों की बड़ी दवा है।

हम उन बहुत से युवाओं को न भूलें जो इसलिए आत्महत्या करने के बोझ तले हैं कि उन्होंने अपने माता–पिता में परमेश्वर के प्रेम को नहीं देखा है। अन्य जो घर में प्रेम से इतने दबाए जाते हैं कि बड़े होकर जब उन्हें इतनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है तो वे हार माल लेते हैं। लोगों को हर स्थिति में याद दिलाया जाना आवश्यक है कि यीशु उन्हें विजयी बना देगा यदि वे वफ़ादार बने रहते हैं (रोमियों 8:28, 31–39)।

कोई दूसरा अवसर नहीं (9:27, 28)

9:27, 28 में पहले मृत्यु और फिर न्याय की बात यह दिखाती है कि मृत्यु के बाद उद्धार के लिए कोई और अवसर नहीं है। बाइबल कहीं भी गलती सुधारने, पुनर्जन्म या दूसरे अवसर की शिक्षा नहीं देती है। व्यक्ति की मृत्यु परमेश्वर द्वारा ठहराई गई है और एक ही बार होती है। यह पक्का है कि सब लोग मरेंगे (उन्हें छोड़ जो द्वितीय आगमन के समय जीवित होंगे), परन्तु यह और भी पक्का है कि सब न्याय का सामना करेंगे।

टिप्पणियां

[1]नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2002), 114 से लिया गया। [2]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 309. [3]लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़*, 115. [4]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 249. रब्बियों ने लिखा था कि प्रत्येक वर्ष एक नया पर्दा लगाया जाता था, जिस कारण सवाल ही नहीं कि यह अपने आप फट गया हो। (मिलिगन, 312.) भूकम्प में भी पर्दा ऊपर से नीचे तक फट जाने के बजाय हिल रहा होगा। [5]बाइबल में यह शब्द नहीं मिलता है, परन्तु यशायाह 60:2; मत्ती 17:5; लूका 2:9; रोमियों 9:4 में इस विचार का संकेत मिलता है और तरगुम्स में इस का उल्लेख है। [6]''वाचा की पटियां'' (आयत 4) अभिव्यक्ति दस आज्ञाओं सहित मेल खाता है ''वाचा'' के साथ पक्की तरह से। NIV में ''प्रायश्चित का ढकना'' (9:5) है। [7]पुराना नियम यह स्पष्ट नहीं करता है कि मन्ना वाला बर्तन और हारून की छड़ी भी संदूक के अन्दर थे। न ही इब्रानी पुराना नियम इस बात का उल्लेख करता है कि वह बर्तन (मरतबान) सोने का बना था, चाहे LXX में यह बताया गया है। यह संस्करण सही हो सकता है, या परमेश्वर ने यह जानकारी इब्रानियों के लेखक पर प्रकट की हो सकती है। [8]जोसेफ़स *वार्स 1.7.6*; *एन्टिक्विटीज़* 14.4.4; टेसिटुस *हिस्ट्री* 9. [9]एफ़. एफ़. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस

पब्लिशिंग कं., 1964), 188, एन. 29. इस पत्थर का उल्लेख *मिशनाह योमा* 3.5.2 में है। [10]निर्गमन 25:18–22; 29:43; गिनती 7:89; यहेजकेल 10:19, 20.

[11]केनथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 153. [12]यह सच है कि वचन में तम्बू में जाने की बात पर विचार हो रहा है, परन्तु तम्बू परमेश्वर के डिज़ाइन के अनुसार दिए गए आराधना के नमूने वाली मन्दिर की शुद्धता का प्रतीक था। 9:6, 7 में वर्तमानकाल को केवल इब्रानियों के लिखे जाने के समय वर्तमान क्रिया के रूप में निकाला नहीं जा सकता। [13]गरेथ एल. रीस ने उस दिन महायाजक के वस्त्र से लेकर भेंटों, लहू छिड़कने, धूप जलाने और बलि के बकरे को छोड़ने और उस के कर्त्तव्यों का अच्छा संक्षिप्त सार दिया है (लैव्यव्यवस्था 16)। (गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [मोबरली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992] 147–48.) गिनती 15:27–31 से पता चलता है कि अज्ञानता (अनजाने) में किए गए पाप क्षमा हो सकते थे जबकि आज्ञा न मानने वाले पापी को लोगों में से नष्ट किया जाना था। रीस ने यह भी सुझाव दिया कि महायाजक प्रायश्चित के दिन परम पवित्र स्थान में एक से अधिक बार जाता है। (वही, 148, एन. 40.) [14]*मिशनाह योमा* 8.9. [15]रे सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंटी सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 95. [16]''दृष्टांत'' शब्द *parabolē* है जो अंग्रेज़ी में ''*parable*'' के रूप में आया है। यह किसी चीज़ के ''तुलना के लिए साथ फैंका गया'' का सुझाव देता है, परन्तु यह किसी भी संकेतिक चीज़ के लिए हो सकता है। 11:19 में उस ढंग के लिए जिसमें अब्राहम को *दृष्टांत* के रूप में इसहाक के मुर्दों में से वापस मिलने की बात है, इस्तेमाल किया गया है। (वुएस्ट, 155.) [17]वही। [18]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 196. [19]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1982), 154. [20]वुएस्ट, 156.

[21]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 325. [22]लाइटफुट, *एवरीवन'स गाइड टू हिब्रूज़,* 118. [23]किस्टमेकर, 248. एफ़. एफ़. ब्रूस ने माना कि यह वर्तमान के लिए है। (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 327.) ''पहले ही है'' (NIV) आम तौर पर बेहतर अनुवाद माना जाता है। [24]ब्रूक फोस वेस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड एस्सेस* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 256. [25]''हाथ का बनाया हुआ नहीं'' के लिए यहां (*acheiropoiētos*) शब्द का इस्तेमाल 2 कुरिन्थियों 5:1 में पौलुस द्वारा भी किया गया था, और जैसा कि यहां है, नकारात्मक पूर्वसर्ग के साथ और जगह इस का इस्तेमाल मरकुस 14:58, प्रेरितों 17:24, इब्रानियों 9:24, कुलुस्सियों 2:11 में हुआ है। यह एक मिश्रित शब्द है, जिस का कुछ भाग ''बनाना'' से है। लोगों के अगुओं के नाम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए अपने भाषण में सुलैमान ने ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने नये मन्दिर में नहीं रहना था (2 इतिहास 6:18)। [26]यह इस बात का सुझाव नहीं देता कि वह वास्तव में अपना लहू लेकर स्वर्ग में गया। (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 200.) शारीरिक रूप में कहें तो उस का लहू भूमि पर टपका था। परन्तु वह अपना जीवन देने को तैयार था इस कारण उस का बलिदान स्वर्ग में स्वीकार किया गया। (वुएस्ट, 158–59.) [27]इस समारोह से आराधक को अपने पाप पर विचार करने, आत्मिक शुद्धता की आवश्यकता को देखने और यह समझने का समय मिल जाता है कि परमेश्वर इसे उपलब्ध करवाएगा। (रीस, 153.) [28]पुराने नियम में ''छिड़काव'' हमेशा लहू से होता था, न कि पानी से, और इस का नये नियम के बपतिस्मे से कोई सम्बन्ध नहीं है। [29]मिलिगन ने इस शब्द का अर्थ ''मसीह का ईश्वरीय स्वभाव'' के रूप में बताया (मिलिगन, 325–27)। ऐसे ही विचार वेस्टकोट, 261, और ह्यूजस, 358–59 में दिए गए हैं। [30]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 172.

[31]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 205. [32]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 189. [33]शुद्ध विवेक की बात फिर से 13:18 में की गई है जहां लेखक ने अपने लिए और अपने सहकर्मियों के लिए प्रार्थना करने की विनती की। 1 पतरस 3:21 यह दिखाता है कि शुद्ध विवेक बपतिस्मे में प्रभु के आज्ञापालन के द्वारा मिलता है। [34]ह्यूजस, 360–61 से लिया गया। [35]*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन एंड जी. सी. डी. हाउले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986), 1522 में गरेल्ड एफ़. हाअर्थॉर्न, ''हिब्रूज़।'' [36]ह्यूजस, 365. [37]वुएस्ट, 163. [38]इस का ''इस्तेमाल नई वाचा में (9:15 और 12:24 में भी) केवल यीशु की

भूमिका के लिए उसी ढंग से किया गया है जिस का इस्तेमाल 1 तीमुथियुस 2:5 में पौलुस उस के लिए करता है'' (जिम गर्डवुड एंड पीटर वर्करुइस, *हिब्रूज़,* द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री [जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997], 269)। [39]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ंडट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 183. [40]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 181.

[41]देखें 1:2, 4, 14; 6:12, 17; 9:15; 11:7, 8; 12:17. [42]देखें प्रेरितों 20:32 (इफिसुस के प्राचीनों से बात करते हुए); गलातियों 3:18; इफिसियों 1:14, 18; 5:5; कुलुस्सियों 3:24. [43]गर्डवुड एंड वर्करुइस, 298. [44]NIV में आयत 16 में पूरा अनुवाद है ''मृत्यु को साबित करना आवश्यक है।'' [45]एक अर्थ में यह घोषणा करते हुए कि उसे ऐसा करने का अधिकार है और एक बार फिर इसकी शर्तों को समझाते हुए यीशु ने अपनी ही इच्छा को ''परखा'' या प्रभावी बनाया (मत्ती 28:18-20)। [46]एफ़. एफ़. ब्रूस, *द लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 128. [47]''बांधी गई'' (*egkainizō*), जिसका अनुवाद ''समर्पित की गई'' (ASV; NKJV) या ''प्रभावी हुई'' (NIV) भी हुआ है का अर्थ ''पुष्टि किया'' या ''नया बनाना'' हो सकता है। 10:20 में एक बार फिर इस का इस्तेमाल ''एक नये और जीवित मार्ग'' के लिए किया गया है। (गुथरी, 192-93.) [48]ह्यूजस, 374. [49]''धन्यवाद देना'' के लिए यूनानी शब्द से कुछ धार्मिक संगठनों में प्रभु भोज को ''यूखरिस्त'' के रूप में जाना जाता है। नये नियम में प्रभु भोज के लिए इस शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ है परन्तु भोज के आरम्भ में यीशु ने धन्यवाद दिया। [50]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 215. हारून के छिड़के जाने का निर्देश निर्गमन 40:12-16 में दिया गया है परन्तु लहू की कोई बात नहीं है। इब्रानियों में दिए गए यही तथ्य जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 3.8.6 में मिलते हैं। कई प्राचीन हस्तलिपियों में चाहे ''बकरों'' का उल्लेख नहीं है (ह्यूजस, 375), परन्तु इब्रानियों 9:13 में अधिकतर संस्करणों में ''बकरों'' का उल्लेख है। बकरों का इस्तेमाल पुराने नियम में होमबलि के लिए किया जाता (लैव्यव्यवस्था 1:10)। (गुथरी, 193.)

[51]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 3.8.6; 4.4.6. [52]जोसेफ़स ने कहा कि तम्बू पर लहू और तेल छिड़का गया था। (वही, 3.8.6.) [53]स्टेडमैन, 101, एन. [54]ह्यूजस, 378. [55]मिलिगन, 335. [56]''[परमेश्वर के लोगों] को ही भीतरी शुद्धता की आवश्यकता है, ... ताकि वे उस के लिए उपयुक्त निवास बन सकें'' (ब्रूस, 219)। [57]वही, एन. 152. [58]वुएस्ट, 168. [59]बाउर, 75. [60]रीस, 163, एन. 103.

[61]ह्यूजस, 383, एन. 37. ह्यूजस ने वर्तमान काल की वे सभी आयतों बताई जो संकेत देती हैं कि इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय मन्दिर की आराधना जारी थी। (ह्यूजस, 31-32.) [62]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 221. [63]वही, 222. [64]गर्डवुड एण्ड वर्करुइस, 305. [65]यह अभिव्यक्ति और कहीं 1 कुरिन्थियों 1:7; फिलिप्पियों 3:20 और रोमियों 8:19, 23, 25 में भी मिलती है। [66]पढ़ें प्रेरितों 2:36-41; 8:12, 13, 34-39; 10:46-48; 16:15, 27-34; 18:8; 19:1-6; 22:16; 1 कुरिन्थियों 1:14 भी देखें। [67]देखें 7:22; 8:6, 8, 9 (दो बार), 10; 9:4 (दो बार), 15 (दो बार), 16, 17, 20; 10:16, 29; 12:24; 13:20. [68]वुएस्ट, 163. [69]वाचा बांधने के अतिरिक्त विवरण ''द कविनेंटस'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अक्टूबर 2000): 3 में ओवन डी. ऑल्ब्रट, ''ऐन इंट्रोडक्शन'' में दिए गए हैं। [70]वुएस्ट, 164.

[71]*द एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* संपा. फ्रैंक ई. गैबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1981), अंक 12:70 में लियोन मौरिस, ''हिब्रूज़।'' [72]यूनानी शब्द *kuriakos* का इस्तेमाल नये नियम में केवल दो बार हुआ है जिसमें एक बार ''प्रभु भोज'' के लिए (1 कुरिन्थियों 11:20) और एक बार ''प्रभु के दिन'' के लिए (प्रकाशितवाक्य 1:10)। एवरट फर्ग्यूसन ने निष्कर्ष निकाला कि ''प्रभु भोज'' और ''प्रभु का दिन'' दोनों इकट्ठे हैं। (एवरट फर्ग्यूसन, *द चर्च ऑफ़ क्राइस्ट: ए बिब्लिकल इक्लेसियोलॉजी फ़ॉर टुडे* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996], 242.) [73]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ़ दैट प्लीज़* गॉड (व्हीटन, इलिनोय: टिण्डेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 228. [74]ह्यूजस, 317. [75]रॉबर्ट ई. कोलेमन, *रिटन इन ब्लड: ए डिवोशनल स्टडी ऑफ़ द ब्लड ऑफ़ क्राइस्ट* (ओल्ड टैप्पन, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1972), 32-33. [76]फ्रीड-हार्डमैन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) के प्रधान, दिवंगत एच. ए. डिक्सन का कहना था, ''यीशु के लहू के सम्बन्ध में 'बहा' का इस्तेमाल न करो। यह दुर्घटना का संकेत देता है और उस का लहू दुर्घटना से नहीं बहा था।'' उस ने मरना चुना था! [77]टिम स्टैफर्ड, ''*द चर्च'स वार्किंग वूंडेड;* हाऊ शुड वी रिस्पॉन्ड इन ए साइकोलॉजिकल एज?'' *क्रिश्चियनिटी टुडे* (मार्च 2003): 68.